साहित्य सृजन, पठन और मानवता

— सुनीता रानी राठौर

मानवता व्यावहारिक अनुसंधान के उपरांत शोध प्रबंध

अनुसंधान का विषय: साहित्य सृजन, पठन और मानवता

शोधार्थी का नाम: सुनीता रानी राठौर

पंजीयन संख्या: HR/369/83

दिनांक:

मार्गदर्शक: डॉ. प्रो. ए के जैन

दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र
DIVYA PRERAK KAHANIYAN HUMANITY RESEARCH CENTRE
An ISO 21001- 2018 Certified Research 33 Institution
Regd - Under Indian Trust Act 1882 Government India
पंजीकृत कार्यालय: टेक्मा, जिला - आजमगढ़, उत्तर प्रदेश (भारत)

आभार

मैं अपने इस शोध पत्र " साहित्य सृजन पठन और मानवता " के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूं। सबसे पहले मैं उन सभी लेखकों और कवियों का आभार प्रकट करती हूं जिनके साहित्यिक सृजन ने मुझे इस विषय पर अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

मैं उन सभी मार्गदर्शकों और विद्वानों का आभार व्यक्त करती हूं, विशेष कर डॉक्टर प्रोफेसर ए के जैन जी को, जिन्होंने मेरे शोध कार्य को दिशा प्रदान की और मेरे पठन व अध्ययन को समृद्ध किया। उनका मार्गदर्शन मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

मैं उन सभी लोगों का भी धन्यवाद करती हूं जिन्होंने किसी न किसी रूप में इस शोध कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दिया। उनके प्रोत्साहन और समर्थन के बिना यह शोध पत्र संभव नहीं हो पाता।
इस शोध में आंशिक सहयोग गूगल द्वारा भी लिया गया है, जैसे कि कुछ संतों एवं विद्वानों का मानवतावादी विचार एवं तर्क।

धन्यवाद!

भवदीया

सुनीता रानी राठौर

सुनीता रानी राठौर

शोध विषय - साहित्य सृजन, पठन और मानवता

HR/369/83

शोधार्थी घोषणा पत्र

मैं, सुनीता रानी राठौर (शोधार्थी दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र) यह प्रमाणित करती हूं कि प्रस्तुत शोध प्रबंध साहित्य सृजन, पठन और मानवता जो व्यावहारिक अनुसंधान का मूल भाग है तथा अप्रकाशित है। इस शोध प्रबंध को डॉक्टर प्रोफेसर एके जैन के मार्गदर्शन में हमने पूरा किया है। मैं यह घोषणा करती हूं कि इससे पहले किसी अन्य डिग्री, डिप्लोमा के लिए उपयोग नहीं किया गया है। यह भी प्रमाणित करती हूं कि हमने अपना अनुसंधान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

दिनांक: शोधार्थी का हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक घोषणा पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र के अंतर्गत "साहित्य सृजन, पठन और मानवता" विषय पर आधारित शोधार्थी सुनीता रानी राठौर द्वारा किया प्रस्तुत अनुसंधान मूल व अप्रकाशित भाग है। इनके द्वारा मेरे निर्देशन में यह शोध कार्य किया गया है एवं शोध प्रकाशन के लिए उपयुक्त है।

वर्तमान में यह व्यावहारिक अनुसंधान कार्य सामाजिक समरसता, आपसी एकता, प्रेम, सहयोग, परोपकार, नैतिकता तथा मानवता युक्त सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में अति महत्वपूर्ण साबित होगा। इस तरह का अनुसंधान कार्य करना अनुसंधान कर्ता की कार्य कुशलता व सच्ची मानवता के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी ने अपना अनुसंधान कार्य दिव्य प्रेरक कहानियां मानवता अनुसंधान केंद्र द्वारा प्रतिपादित सभी नियम व निर्देशों के तहत पूर्ण किया है।

दिनांक----------

पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर

डॉ. प्रो. ए के जैन

सारांश (Abstract)

यह शोध पत्र साहित्य सृजन, पठन और मानवता पर केंद्रित है। साहित्य सृजन के माध्यम से लेखक अपने समय, समाज और संस्कृति को प्रतिबिंबित करते हुए समाज के गहरे मुद्दों, मानवीय कमजोरी, और उत्कृष्टताओं को उजागर करता है। पठन साहित्य सृजन का दूसरा पहलू है। पठन के माध्यम से पाठक नयी जानकारी और ज्ञान प्राप्त करता है। उसमें संवेदनशीलता और सहानुभूति का विकास होता है जिसके फलस्वरुप वह दूसरों की पीड़ा, संघर्ष और खुशी को महसूस कर पता है।

मानवता साहित्य सृजन और पठन दोनों का केंद्रीय तत्व है। मानवता हमें यह सिखाता है कि हम कैसे एक दूसरे के साथ बेहतर संवाद कर सकते हैं, विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक विभाजनों को कैसे पाट सकते हैं। साहित्य सृजन और पठन मानवता को समृद्ध करते हैं, हमें बेहतर इंसान बनने में मदद करते हैं, और एक गहरे, अधिक जुड़े हुए समाज की नींव रखते हैं।

अनुक्रमणिका (Table of contents)

1. : परिचय।

2. : शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन।

3. : शोध विषय का उद्देश्य।

4. : शोध विषय का महत्व।

5. : साहित्य सृजन की आवश्यकता एवं प्रभाव।

6. : साहित्य पठन की आवश्यकता एवं प्रभाव।

7. : साहित्य सृजन एवं पठन का समाज के नवनिर्माण में योगदान।

8. : साहित्य सृजन और पठन का मानवता से संबंध।

9. : संतों और विद्वानों का मानवतावादी दृष्टिकोण।

10. : आम जीवन में घटित मानवता के चंद उदाहरण।

11. : शोध विषय का भूत, वर्तमान, भविष्य परिपेक्ष में व्याख्या।

12. : शोध की आवश्यकता।

13. : शोध प्रबंध के मुख्य घटक।

14. : संदर्भ व्याख्या।

15. : भाषा शैली।

16. : तार्किक विश्लेषण।

17. : स्वाभिमत (खुद का नजरिया)।

18. : शोध सार।

परिचय (Introduction)

साहित्य क्या है?

साहित्य समाज के दर्पण के रूप में काम करता है जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतिबिंब दिखाई देता है। जहां दर्पण मानव की वाहय विकृतियों और विशेषताओं को दर्शाता है वहीं साहित्य मानव की आंतरिक विकृतियों और खामियों को दर्शाता है।

साहित्य समाज को राह दिखाता है, "कैसा था और है, भविष्य में कैसा होगा। "मैथिली शरण गुप्त जी की पंक्ति याद आती है -

"हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी,

आओ मिलकर विचारें समस्याएं सारी।"

प्रेमचंद जी ने भी कहा है कि साहित्य समाज का दर्पण है। मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य को जीवन की आलोचना कहा है। उनके विचार से साहित्य चाहे निबंध के रूप में हो, कहानी के रूप में हो या काव्य के रूप में हो, साहित्य को हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।

पाश्चात्य विद्वान वरसफील्ड ने लिखा है:-

"साहित्य मानवता का मस्तिष्क है।"

मानव अपने मन में उठने वाले भावों को जब लेखनीबद्ध कर भाषा के माध्यम से प्रकट करने लगता है तो वह रचनात्मकता ज्ञानवर्धक अभिव्यक्ति के रूप में साहित्य कहलाता है।

डॉक्टर श्यामसुंदर दास के अनुसार:-

'भिन्न-भिन्न काव्य कृतियों का संग्रह ही साहित्य है।'

संस्कृत का एक प्रसिद्ध सूत्र वाक्य है:-

"हितेन सह इति सष्टिमूह तस्याभाव: साहित्यम।"

जिसका अर्थ होता है - साहित्य का मूल तत्व सबका हित साधन है। साहित्य जब तक समाज के लिए उपयोगी होता है तभी तक वह ग्रहण करने योग्य होता है अन्यथा वह बेकार है।

साहित्य सृजन क्या है?

सृजन का अर्थ होता है, उत्पन्न करना या अस्तित्व में लाना। सृजन के माध्यम से हम अपनी विचारशीलता को प्रकट करते हैं और नई चीजों को जन्म देते हैं।

साहित्य सृजन का अर्थ है, किसी साहित्यिक रचना या कृति की रचना करना। इसमें कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, निबंधों, लेखों और अन्य प्रकार के साहित्यिक कार्यों का निर्माण शामिल है।

साहित्य सृजन एक रचनात्मक प्रक्रिया है जिसमें लेखक अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है ताकि पाठक को वही संदेश या भावना का अनुभव हो सके जो लेखक अपनी रचना के माध्यम से व्यक्त करना चाहता है।

साहित्य पठन क्या है?

साहित्य पठन का अर्थ है, साहित्यिक रचनाओं जैसे की कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, निबंधों, और अन्य साहित्य कार्यों को पढ़ना और उनका अध्ययन करना। साहित्य पठन एक गहन और समृद्ध अनुभव है जो व्यक्ति के जीवन में ज्ञान, आनंद और विकास की अनमोल संभावनाएं प्रदान करता है।

मानवता क्या है?

सरल भाषा में कहें तो दूसरों की देखभाल और मदद करना ही मानवता है या यूं कहें हम जहां भी हों, हमसे जितना बन सकता हो, हर हाल में दूसरों की देखभाल और मदद करना ही मानवता कहलाता है।

मानवता का अर्थ है सहयोग, अहिंसा, सामाजिकता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा आदि। समाज में जहां, सभी व्यक्तियों

को न्याय, समानता और आधारभूत मानवाधिकारों की प्राप्ति होती हो, वहीं हम कह सकते हैं कि मानवतावाद का झंडा फहरा रहा है।

मानव मूल्य (Human Values)

वे नैतिक सिद्धांत, मान्यताएं, और गुण हैं, जो समाज में एक व्यक्ति के जीवन को सार्थक और गरिमापूर्ण बनाते हैं। यह मूल्य समाज संस्कृति, और व्यक्तिगत नैतिकता के आधार पर विकसित होते हैं और मानवता की उन्नति, समाज में सद्भाव, और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक होते हैं।

कुछ प्रमुख मानव मूल्य है:

सत्य, अहिंसा, सामानता, करुणा, ईमानदारी, धैर्य, सम्मान, न्याय,दया आदि।

यह सभी मूल्य एक व्यक्ति को एक बेहतर इंसान और समाज को अधिक सभ्य और सामंजस्यपूर्ण बनाते हैं।

मानव मूल्य का अर्थ:

ऐसे गुण, ऐसी भावनाएं जिससे मानव साधारण दिनचर्या से ऊपर उठकर परस्पर करुणा, प्रेम सहानुभूति, सद्भाव उत्पन्न कर सके।

व्यवहारिक मूल्य:

व्यवहारिक मूल्य भौतिक जीवन को सुखी बनाने में सहायक होते हैं।

आदर्श मूल्य:

नैतिक मूल्य व परमार्थिक मूल्यों को कहते हैं। इन्हीं मूल्यों के द्वारा मानव व्यवहार संचालित होते हैं। मूल्य हीनता की स्थिति में अमर्यादा, असत्य, अनास्था, अविश्वास, कुंठा, एवं प्रतिशोध जन्म लेता है।

शोध विषय की प्रेरणा व चयन

मेरी रुचि शुरू से लेखन कार्य में रही है। मैं अनेको साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ी रही हूं। मानवता की भावना को उजागर करते हुए, अनेकों गजल, दोहा, कविता, आलेख आदि लिख चुकी हूं। मैं अमानवता के खिलाफ सदा से लड़ती आई हूं। यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को अनावश्यक रूप से तंग करता है, परेशान करता है, या उसे दुख पहुंचाता है तो, मुझसे सहन नहीं होता और मैं पीड़ित व्यक्ति का पक्ष लेकर खड़ी हो जाती हूं। यही कारण है कि मेरी साहित्यिक रचनाओं में मानवता का पुट स्वाभाविक रूप से झलकता है। मेरी विचारधारा, दृष्टिकोण मानवता से ओत- प्रोत रही है। इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर मैंने "साहित्य सृजन, पठन और मानवता" विषय का चयन अपने शोध के लिए किया है। दूसरे और भी कारण हैं जिससे प्रेरित होकर मैंने इस शोध विषय का चयन किया है, जो निम्नलिखित हैं:-

साहित्य आदमी को आदमी बनाए रखने में सहजता से मदद करता है। साहित्य मनुष्य और मनुष्य के बीच पैदा हुई जातिगत, धर्मगत, स्वार्थगत दीवारों को तोड़ते हुए मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रसार करती है। आज के समय में या यूं कहें वर्तमान मानव हर विषय को केवल धनार्जन के तराजू पर तौल कर देखता है। किसी कार्य से अगर धन की प्राप्ति नहीं तो भला उसे करने से फायदा ही क्या। यही आज के मानव का विचार है। दिन पर दिन पुस्तकालय की संख्या कम होती जा रही है। पुस्तक ना पढ़ने के कारण लोग साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। जिसके फलस्वरुप लोगों में करुणा, स्नेह, मेल -मिलाप, मानवता के गुण आदि का ह्रास होता जा रहा है। जाति-धर्म, उच्च-नीच, अमीरी- गरीबी के बीच खाई बढती जा रही है। आए दिन दंगे देखने को मिलते हैं और मनुष्य, मनुष्य का दुश्मन हो गया है उदाहरणस्वरूप:-

बीफ के नाम पर एक धर्म विशेष द्वारा पहलू खान को पीट-पीट कर मार देना।

एक प्रेमी द्वारा प्रेमिका के शरीर को कुट्टी-कुट्टी काट देना।

गो तस्करी के नाम पर तीन लोगों को जिंदा जला देना। ऐसे और भी बहुत सारे उदाहरण मिल जायेंगे। साहित्य

अध्ययन के उपरांत जब कमरे का दरवाजा खोलेंगे तो सामने उपस्थित हर शख्स, जीव जंतु के प्रति आपके मन में एक अद्भुत स्नेह उत्पन्न होगा।

साहित्य के अध्ययन से जीवन के प्रति निरसता और विरक्ति दूर हो, प्रेम और गहरा जाता है। हम जितना अधिक साहित्य पढ़ते हैं उतना ही जीवन के प्रति प्रेम और बढ़ता चला जाता है।

अपने विचारों को मजबूत बनाने के लिए तथा स्वयं को सृजनशील बनाने के लिए साहित्य बहुत ही उपयोगी है।

जीवन की विषम परिस्थितियों का सामना करने में साहित्य का अध्ययन उपयोगी होता है। साहित्य कुरीतियों व कुप्रथाओं को उजागर करता है। साहित्य हमें सौम्य और सरल बनता है। साहित्य मैं के भाव को नष्ट कर देता है। साहित्य का अध्ययन हमें दान अथवा मानव कल्याण के लिए प्रेरित करता है। साहित्य पढ़ने से मन में खुशी का संचार होता है।

मानव जीवन में साहित्य सृजन एवं पठन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। साहित्य के बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं रहता बल्कि वह पशु के समान हो जाता है। निम्नलिखित श्लोक उपयुक्त कथन को साबित करने में सक्षम है:-

"साहित्य संगीत कला विहीन: , साक्षात पशु पूच्छ विषाण विहीन:।।

तृणम न खाद्न्नपि जीवमान : तथा भाग देयम परम पशुनाम।।"

इस श्लोक का अभिप्राय है जो मनुष्य साहित्य, संगीत अथवा कला से विहीन है, वो साक्षात बिना पूंछ और सींग वाले जानवर के समान है। इस तरह का जीव ना तो घास खाता है पर अन्न खाकर जीवित रहता है।

मुझे यह विषय निम्नलिखित कारणों से भी पसंद है:-

<u>समाज के उत्थान का माध्यम:</u>

समाज के उत्थान के लिए, समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए तथा समाज में आवश्यक सुधार के लिए,

साहित्य सृजन एवं पठन की आवश्यकता नितांत आवश्यक है। साहित्यिक उपन्यास, सामाजिक कथाएं और कविताएं हमें सामाजिक सुधारो के लिए प्रेरित करती हैं।

विचारों एवं भावनाओं का संचार:

साहित्य सृजन एवं पठन हमें अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को एक दूसरे से साझा करने का माध्यम प्रदान करता है। साहित्य के अंतर्गत कविताएं, कहानियां और कई लेखन कार्य इस प्रकार के भावनात्मक संचार का माध्यम होते हैं। साहित्य हमें सोंचने, विचार करने और नए दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

समसामयिकता का अनुभव:

साहित्य सृजन एवं पठन के माध्यम से हम अपने काल की समसामयिकता का अनुभव कर पाते हैं। साहित्यिक पुस्तकें समाज में व्याप्त उस समय की चुनौतियों, समस्याओं और घटनाओं को उजागर करते हैं।

मनोरंजन का स्रोत:

साहित्य मनोरंजन का महत्वपूर्ण स्रोत है। कविताएं, कहानियां, उपन्यास और नाटक हमें मनोरंजन और आनंद प्रदान करते हैं। यह हमारे जीवन को सुंदर, सरस और खुशनुमा बनाते हैं।

मानवता का संदेश:

साहित्य सृजन एवं पठन के माध्यम से हमारे अंदर दया, करुणा और तर्कशीलता को बढ़ावा मिलता है। इसके फलस्वरुप क्रोध व वैमनस्य का खात्मा हो जाता है और मानवता के गुण का संचार होता है। यह मनुष्य को मनुष्य बनाता है। यह हमें सिखाता है कि समस्त मनुष्य एक समान है।

शोध विषय का उद्देश्य

शोध विषय के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:-

- इस शोध के माध्यम से मैं यह जांचने या दर्शाने का प्रयास करूंगी की साहित्य सृजन, पठन और मानवता किस प्रकार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

- साहित्य सृजन और पठन समाज के मानवीय सोंच को विकसित और परिष्कृत करने में किस प्रकार सहयोगी है।

- यह भी समझने का प्रयास रहेगा की साहित्य सृजन और पठन के अभाव में समाज में मानवीय मूल्यों का किस प्रकार ह्रास हो रहा है।

- साहित्य सृजन और पठन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, समझ पाएंगे।

- साहित्य सृजन और पठन समाज के नवनिर्माण में किस प्रकार योगदान देता है, जानकारी प्राप्त कर पाएंगे।

- साहित्य सृजन और पठन का संबंध मानवता से किस प्रकार है, जान पाएंगे।

- संतों और विद्वानों के मानवतावादी दृष्टिकोण को समझ पाएंगे।

- मानवता का सही मतलब समझ पाएंगे।

शोध विषय का महत्व

साहित्य सृजन, पठन और मानवता का महत्व बहुत ही गहरा और व्यापक है। साहित्य सृजन के माध्यम से लेखक अपनी संवेदनाओं, भावनाओं, अनुभवों, विचारों को शब्दों में ढालकर समाज की स्थिति को व्यक्त करता है।पाठक उन भावनाओं से जुड़ते हैं, जिनसे वे प्रत्यक्ष रूप से परिचित नहीं होते, जिसके फलस्वरुप मानवीय गुणों का विकास होता है।

साहित्य सृजन और पठन के माध्यम से हम विभिन्न समयों और स्थानों में समाज की स्थिति, उसकी चुनौतियों और उसकी मानसिकता को समझ पाते हैं। हम उन समस्याओं को भी समझ पाते हैं जो मानवता को विभाजित या एकजुट करती है।

साहित्य में ऐसा सामर्थ्य है कि वह समाज सुधारकों और आंदोलन को प्रेरित कर समाज में बदलाव ला सकता है।

साहित्य मानवता की मूल भावना, जैसे; सहानुभूति, करुणा, प्रेम, और परस्पर समझ को विकसित करता है, जो मानवता की बुनियाद है।

साहित्य सृजन की आवश्यकता एवं प्रभाव

साहित्य सृजन न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी आवश्यक है। साहित्य सृजन के माध्यम से लेखक मानवता के पक्ष को उजागर करता है, जिसके अध्ययन से मनुष्य एक बेहतर इंसान बनने, दूसरों के प्रति दया, प्रेम, और करुणा जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रेरित होता है।

कवि अपनी सृजनशीलता में कल्पनाशीलता से अनंत तक जा सकता है और इसलिए कहा जाता है " जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि"। कवि सामाजिक परिस्थितियों, राष्ट्रीय, सामाजिक, और व्यावहारिक स्थितियों को जनमानस तक पहुंचाने का कठिन कार्य अपने काव्य के द्वारा करता है।

साहित्य सृजन एक समाज की संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित और प्रकट करने का माध्यम है। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर का दस्तावेज तैयार करता है। यह पाठकों को विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी प्रदान करता है और उनके विचारों को विकसित करने में सहायता करता है। साहित्य सृजन के माध्यम से शिक्षा का प्रसार होता है। साहित्य सृजन के माध्यम से लेखक और पाठक के बीच भावनात्मक संबंध स्थापित होता है। यह पाठकों के दिल और दिमाग को छूता है, उन्हें सोचने पर मजबूर करता है। साहित्य सृजन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन है। साहित्यकार जब समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों और वैमनस्य को दूर करने का प्रयास करता है तब साहित्यकार को साहित्य सृजन की आवश्यकता महसूस होती है। जब कोई मनुष्य अपने अनुभव को दूसरों के साथ या समाज में बांटना चाहता है ताकि दूसरे लोग भी उसके अनुभव का फायदा उठा पाएं, तब साहित्य सृजन की आवश्यकता होती है। साहित्य का सृजन जनजीवन के धरातल पर ही होता है। प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित वृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है। साहित्य सृजन की आवश्यकता इसलिए भी महसूस की जाती है कि "कही गई बात मिट जाती है किंतु लिखी हुई बात अमर हो जाती है।"

"जो कह दिया सो बह गया

जो लिख दिया सो रह गया

एक प्रवाह बन गया

दूसरा शाश्वत हो गया।।”

कई बार किसी कहानी या मर्मान्तक प्रसंग को पढ़कर आंखें बरबस सजल हो उठती हैं, खास तौर पर रामायण व महाभारत के कई प्रसंगों पर - द्रोपदी की चीर हरण का प्रसंग, सीता की अग्नि परीक्षा या वनवास की बात, अहिल्या प्रसंग, चित्रकूट में भरत और राम के मिलन का प्रसंग इन सब को पढ़कर हर बार आंखों से अश्रुधारा का प्रवाह रोके से भी नहीं रुकता। सत्य ही कहा गया है कि साहित्य सृजन की पूर्णता तो भावों से जुड़ने पर ही सार्थक होती है।

जिस प्रसंग या घटना के प्रति मन एकरूप हो जाता है, जिसमें पाठक अपने आप को जोड़ लेता है या रचना में पाठक स्वयं को अनुभूत करता है वही सहित्य या साहित्य सृजन सार्थक होता है। जब महर्षि वेदव्यास जी ने एवं महर्षि वाल्मीकि ने अपना साहित्य सृजन किया होगा तो कहां से वेदना की इतनी मुखर अभिव्यक्ति का भाव लेकर आए होंगे।

"वियोगी होगा पहला कवि

आह से उपजा होगा गान ।

उमड़कर आंखों में चुपचाप

बही होगी कविता अनजान।।"

शायद वेदना के सूक्ष्म चितेरे ही अपने हृदय की वेदना, अपने भावों को अपनी सृजनात्मकता द्वारा इतनी खूबसूरती से व्यक्त कर पाते हैं। जिसके हृदय में सच्ची अनुभूति होती है वही इस कार्य को बखूबी कर पाते हैं। सूरदास जी ने मन की आंखों से अपने साहित्य सृजन द्वारा कृष्ण के वात्सल्य और श्रृंगार रूप का जो चित्रण कियावह भला कितने ही आंखों वाले साहित्यकार कहां कर पाए। आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं -

"वात्सल्य और श्रृंगार का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आंखों से किया है उतना किसी और कवि ने नहीं।"

साहित्य सृजन का पथ सचमुच इतना आसान नहीं, इस उत्कृष्ट साधना पथ पर वहीं उतर सकता है जिसने साधन और साध्य की पवित्रता के अंतर को समझा है, जिसने साधना के इस श्रमसाध्य मार्ग में बिखरे कंटकों को फूलों की सेज माना हो।

संस्कृत काव्य के शिखर पुरुष कालिदास से लेकर हिंदी साहित्यिक रत्नों के सृजन पद पर दृष्टि डालने पर हम सदैव यही पाते हैं कि हमारे साहित्य को आलोकित करने वाले यह सर्जनधर्मी सदैव किसी उच्च आदर्श से अनुप्राणित रहे होंगे अन्यथा इतनी उत्कृष्ट व संवेदनाओं से परिपूर्ण उच्च साहित्यिक कृतियों से हमारा साक्षात्कार होना संभव न होता।

कोरोना के लॉकडाउन में हर एक शिक्षित भारतीय ने साहित्य का सृजन किया है। साहित्य को खूब पढ़ा गया और लिखा गया। इंटरनेट, फेसबुक, व्हाट्सएप, टेलीग्राम और मैसेंजर पर नीत नए विचारों के साथ नए साहित्यकारों ने जन्म लिया है।

सृजनात्मकता मानव मन को नवीनता और आविष्कार की ओर आकर्षित करती है। हम नए और नवचारी विचारों का स्वागत करते हैं जो हमें अपने क्षेत्र में बेहतरीन बनाते हैं। यह हमें नई दृष्टि देता है और हमारे जीवन को आनंदमय बनाने में मदद करता है। व्यक्तिगत स्तर पर सृजनात्मकता हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है। इसके अलावा यह हमें समस्याओं को हल करने के नए तरीके ढूंढने के लिए प्रेरित करती है और हमें नए क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं का निर्माण करने के लिए प्रेरित करती है। सामाजिक स्तर पर सृजनात्मकता हमारे समाज को आगे बढ़ाता है। इससे हमारा समाज बढ़ता है और विकास करता है। सृजनात्मकता हमारे समाज को सक्रिय, संवेदनशील, और समर्थ बनाती है। साहित्य सृजन का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। साहित्य सृजन का प्रभाव व्यक्ति और समाज दोनों पर होता है। यह व्यक्ति को नवाचार करने, सोंच को विकसित करने और संवेदनशीलता को बढ़ाने में मदद करता है। साहित्य सृजन मानव जीवन को समृद्ध बनता है और हमें आत्म खोज का अवसर प्रदान करता है जिससे हम अपने बारे में और अधिक समझ पाते हैं और अपने जीवन को अर्थपूर्ण बना पाते हैं।

साहित्य पठन की आवश्यकता एवं प्रभाव

साहित्य पठन से व्यक्ति को विभिन्न विषयों, समाजों, और समयकालों के बारे में जानकारी मिलती है। उसका ज्ञान समृद्ध होता है जो पाठक को विश्व दृष्टिकोण प्रदान करता है। साहित्य पठन से भाषा पर पकड़ मजबूत होती है। यह पाठक के शब्दकोष को बढ़ाता है, व्याकरण और भाषा की समझ को गहरा करता है और संचार कौशल में सुधार करता है। साहित्य पठन व्यक्ति को आत्म चिंतन करने और अपने विचारों और मूल्यों की जांच करने का अवसर प्रदान करता है। यह पाठक के लिए एक दार्शनिक और नैतिक मार्गदर्शन का साधन बन सकता है। साहित्य पठन एक उत्कृष्ट मनोरंजन का साधन है। यह पाठक को एक नई दुनिया में ले जाता है, जहां वह कहानियों और पात्रों के माध्यम से आनंद प्राप्त करता है।साहित्य पढ़ने से अलग-अलग तरह के किरदारों को जानने और समझने का मौका मिलता है। चिंतन और तर्क शक्ति का विकास होता है। साहित्य पठन के द्वारा हम कबीर, तुलसी, सूरदास की कविताओं के माध्यम से निर्गुण भक्ति से लेकर सगुन भक्ति तक का दर्शन कर पाते हैं। आज के भाग दौड़ भरी जिंदगी में थोड़े से ठहराव के लिए एवं अतीत के सुनहरे दौर को जीने खातिर साहित्य पठन अति आवश्यक है। मैथिली शरण गुप्त जी की पंक्ति:-

"अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है"।।

कहने का तात्पर्य है कि जहां आदित्य (सूर्य) नहीं है वहां अंधकार होता है। वह देश मुर्दा होता है जहां साहित्य का अभाव होता है। साहित्य के अभाव में आदर्श कहां होता है, गर आदर्श नहीं, जीवन कहां होता है। भाषा किसी भी देश की प्रगति की नाभिकुंड होती है। जहां पीड़ा है, दर्द है वहीं से कविता- कहानी शुरू हो जाती है जिसे पढ़कर पाठक के मन में स्वाभाविक रूप से मानवता का प्रसार होता हैसाहित्य पठन से समाज में बदलाव आता है। समाज सुदृढ़ बनता है। साहित्य पठन के द्वारा हम प्राचीन और आधुनिक काल की कहानियों, महाकाव्यों, पवित्र ग्रंथों में

दिए गए तथ्यों को जान पाते हैं। साहित्य अध्ययन के द्वारा हमारे अंदर नैतिकता का प्रसार होता है और हम सही निर्णय लेने में सक्षम हो पाते हैं।

साहित्य पठन का बहुत बड़ा महत्व है। यह मानवीय रिश्तों को जोड़ने की क्षमता प्रदान कर मानवीय मूल्यों को बढ़ाता है। यह हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत। साहित्य के अध्ययन से हम उस युग की विशेषताओं के बारे में जान पाते हैं जिस युग में वह साहित्य लिखा गया था। साहित्य पठन हमें समय-समय पर विभिन्न तरह के ज्ञान से पोषित करता रहता है।साहित्य पठन का मानव जीवन पर गहरा और बहु आयामी प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, और भावनात्मक स्तर पर देखने को मिलता है। साहित्य पठन का प्रभाव हमारी भावनाओं पर पड़ता है जिससे हम अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं और दूसरों की भावनाओं के प्रति अधिक संवेदनशील और सहानुभूति रख पाते हैं।साहित्य पठन से मस्तिष्क का व्यायाम होता है जिससे मानसिक विकास होता है। यह सोचने की क्षमता को बढ़ाता है और रचनात्मकता का विकास करता है जिससे व्यक्ति समस्याओं का समाधान ढूंढने और नए विचारों को विकसित करने में सक्षम होता है। साहित्य पठन व्यक्ति को दैनिक जीवन की चिताओं और तनाव से मुक्ति दिलाकर एक नई दुनिया में ले जाकर मानसिक शांति और सुकून प्रदान करता है । साहित्य पठन का प्रभाव व्यक्ति को एक संपूर्ण और समझदार मानव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह व्यक्ति के जीवन को समृद्ध, संतुलित, और परिपूर्ण बनाने में सहायक होता है।

साहित्य सृजन एवं पठन का समाज के नवनिर्माण में योगदान

समाज के नवनिर्माण में साहित्य सृजन एवं पठन का व्यापक योगदान रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जिसमें समाज की वास्तविकता उसकी समस्याएं और उसके समाधान प्रतिबिंबित होते हैं । साहित्य सृजन के द्वारा लेखक समाज की समस्याओं को उजागर करता है और उनके समाधान के लिए विचार प्रस्तुत करता है। साहित्य पठन के माध्यम से पाठक लेखक के विचारों को आत्मसात करता है।

पाठक समाज की विभिन्न स्थितियों और समस्याओं के बारे में जागरूक होते हैं जिससे उनमें समाज के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है और वह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित होते हैं। साहित्य सृजन और पठन न केवल व्यक्ति के विकास में बल्कि पूरे समाज के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।अच्छे साहित्य के अध्ययन द्वारा समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन सुनिश्चित किया जा सकता है। साहित्य वह सशक्त माध्यम है जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है।

यह समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर या अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाने की प्रक्रिया का सूत्रपात करता है। लोगों को प्रेरित करने का प्रयास करता है। एक ओर यह सत्य के सुखद परिणाम को रेखांकित करता है वहीं असत्य का दुखद अंत कर सीख व शिक्षा प्रदान करता है । अच्छा साहित्य व्यक्ति और उसके चरित्र निर्माण में भी सहायक होता है । यही कारण है कि समाज के नवनिर्माण में साहित्य सृजन एवं पठन की केंद्रीय भूमिका होती है। इससे समाज को दिशा बोध होता है और साथ ही उसका नवनिर्माण भी होता है । साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ-साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा देता है एवं कालखंड की विसंगतियों विद्रूपताओं एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है।समाज और साहित्य में अन्योन्याश्रित संबंध होता है। साहित्य की पारदर्शिता समाज के नवनिर्माण में सहायक होती है जो कमियों को उजागर करने के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करती है। समाज के यथार्थवादी चित्रण, समाज सुधार का चित्रण और समाज के प्रसंग के जीवंत अभिव्यक्ति द्वारा समाज के निर्माण का कार्य करता है।

साहित्य मानव के सामाजिक संबंधों को दृढ़ बनाता है क्योंकि उसमें संपूर्ण मानव जाति का हित निहित रहता है। साहित्य द्वारा साहित्यकार अपने भाव और विचारों को समाज में प्रसारित करता है।साहित्य समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। इस संदर्भ में अमीर खुसरो से लेकर तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, प्रेमचंद, भारतेंदु, निराला, नागार्जुन तक के रचनाकारों ने समाज के नवनिर्माण में अभूतपूवृ योगदान दिया है। व्यक्तिगत हानि उठाकर भी उन्होंने शासकीय मान्यताओं के खिलाफ जाकर समाज के नवनिर्माण हेतु कदम उठाए हैं। मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में भारतीय ग्रामों की आंसुओं भरी व्यथा को मार्मिक रूप से व्यक्त किया। उन्होंने अपनी कहानी "पूस की रात" द्वारा किसानों की दयनीय स्थिति और किसानों पर जमींदारों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का चित्रण कर जमींदारी प्रथा के उन्मूलन का जोरदार समर्थन किया।बिहारी ने तो मात्र एक दोहे के माध्यम से ही अपनी नवोढा रानी के प्रेम पाश में बंधे हुए तथा अपनी प्रजा एवं राज्य के प्रति उदासीन राजा जय सिंह को राज कार्य की ओर प्रेरित कर दिया था।

"नहीं पराग नहिं मधुर मधु, नहीं विकास इहिं काल ।
अली अली सी सौं बंध्यो, आगे कौन हवाल।।

नायिका में आसक्त राजा को शिक्षा देते हुए कवि कहता है कि ना तो अभी इस कली में पराग ही आया है, ना मधुर मकरंद ही। अरे, भौंरे अभी तो यह कली मात्र है। तुम अभी से इसके मोंह में अंधे बन रहे हो। जब यह कली फूल बनकर पराग तथा मकरंद से युक्त होगी, उस समय तुम्हारी क्या दशा होगी? अर्थात जब नायिका यौवन संपन्न सरसता से प्रफुल्लित हो जाएगी तब नायक (राजा) की क्या दशा होगी?साहित्य असंभव को भी संभव बना देता है। उसमें अस्त्र- शस्त्रो से भी अधिक शक्ति छिपी होती है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में:-
“साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती।”

साहित्य सृजन और पठन का मानवता से संबंध

साहित्य सृजन और पठन का मानवता से गहरा संबंध है। साहित्य मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं, भावनाओं, और अनुभवों को समझने और व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। यह मानवता के मूल्यों, संवेदनाओं, और आदर्शों को सहेजने और संचारित करने का कार्य करता है। साहित्य में मानव अनुभवों का गहराई से वर्णन किया जाता है, जिससे पाठक दूसरों के दुःख, सुख, संघर्ष, और भावनाओं को समझ पाते हैं।

इससे उनकी संवेदनशीलता और सहानुभूति की भावना का विकास होता है जो मानवता का एक प्रमुख आधार है। साहित्य सीमाओं से परे जाकर विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और सामाजिक परिवेश में रहते हुए भी सभी मनुष्यों के अनुभव, भावनाएं, और मूलभूत आवश्यकताएं एक समान होती है। इस प्रकार साहित्य मानवता की सार्वभौमिकता को प्रकट करता है। साहित्य मानवीय संघर्षों और आदर्शों का चित्रण कर मानवता का संदेश देता है जो हमें बेहतर बनने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य सृजन और पठन मानवता के विभिन्न आयामों को समझने, उनका सम्मान करने और उन्हें समृद्ध करने का कार्य करता है। यह मनुष्यों को उनके भीतर और बाहरी संसार के प्रति जागरूक बनाकर मानवता के आदर्शों की ओर अग्रसर करता है।

साहित्य मानव जाति के मध्य समानता और एकता का संदेश देता है। यह विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों के बीच विभाजन को कम करने में सहायता प्रदान कर मानवता का संदेश देता है।साहित्यकार जब अपने साहित्य का सृजन करता है तब उसके विचारों के केंद्र बिंदु में मानवता की भावना विद्यमान रहती है ताकि उसके साहित्य से मानव कल्याण सुनिश्चित हो सके। पाठक जब इस प्रकार के साहित्य का अध्ययन करता है तब उसके मन में करुणा एवं मानवता का गुण प्रस्फूटीत हो उठता है और वह मानवता के मार्ग पर चलने को प्रेरित हो उठता है।आज के समय में ज्यादातर लोगों की रुचि साहित्य अध्ययन से दूर होती जा रही है।

साहित्य की जगह कंप्यूटर, लैपटॉप और मोबाइल ने ले लिया है। ज्यादातर लोगों का समय साहित्य पठन की जगह मोबाइल के विषय- वस्तु पढ़ने में व्यतीत हो रहा है। आज के समय में ऐसा प्रतीत होता है जैसे 'वसुधैव कुटुंबकम' का मूल मंत्र संसार से लुफ्त होता जा रहा है। कहीं हिंदू कहीं मुसलमान कहीं इसाई और ना जाने

कितनी कौमों में मनुष्य एक दूसरे से बंटा हुआ अलग-थलग दिखाई दे रहा है।

करोड़ो लोगों की भीड़ दिखाई दे रही है, इस भीड़ में आदमी तो नजर आ रहे हैं पर आदमियत कहीं खो गई है।

शक्ल -सूरत तो इंसान जैसी है मगर कारनामे शैतान जैसे होते जा रहे हैं।साहित्य के माध्यम से लोग अलग-अलग समाज, संस्कृति और विचारों के साथ जुड़ते हैं और समाज में रहते हुए मनुष्य आत्म जागरूकता, समझदारी और समरसता की ओर कदम बढ़ा पाता है। साहित्य के माध्यम से लिखी गई कविताएं, कहानियां, नाटक जैसी साहित्यिक विधाएं लोगों को आपसी संबंधों, समरसता, और मानवता के प्रति जागरूक करती है।

साहित्य के माध्यम से लेखक और सृजक अपने दृष्टिकोण और विचारों को साझा करते हैं, जिससे हम मनुष्य सामाजिक बदलाव और मनुष्य से मानवता की ओर एक सफल तथा कल्याणकारी कदमबढ़ाते हैं। साहित्य मानव अनुभव, भावनाओं,और सोंच को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है, और यह लोगों के बीच समझ, सहमति,और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।साहित्य के माध्यम से हम दूसरों के दर्द और खुशियों को समझते हैं, जिससे हमारा सामाजिक संबंध और भी बेहतर और प्रगाढ़ होता है।

साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त पाखंड, कुरीतियां,अंधविश्वास, घृणा एवं विद्वेष को खत्म कर मानवता के गुण का संचार करने का रहा है। साहित्य पठन के द्वारा मनुष्य की तर्कशीलता में विकास होता है। सोंचने की शक्ति बढ़ती है। मनुष्य समाज हित में कार्य करने की ओर अग्रसर होता है जिसके फलस्वरुप मानवीय गुणों का विकास होता है और समाज सुदृढ़ बनता है।

दुनिया में धर्म, पंथ, मजहब को लेकर विचारों में भिन्नता हो सकती है लेकिन मानवता को लेकर किसी भी धर्म, पंथ और मजहब में मतभेद नहीं होना चाहिए। यही मनुष्यता का मूल है। किसी व्यक्ति की मानवता एक जानवर या वस्तु होने के बजाय एक इंसान होने की स्थिति है। मानवता दूसरों के प्रति दयालु, विचारशील और सहानुभूति रखने का गुण है। हम मानव तब हैं जब हम अपने चारों ओर रह रहे चीजों के प्रति सेंसिटिव हैं। पशु, पक्षी, नदियां, पेड़, धरती और यह आकाश के प्रति प्रेम रखना ही मानवता है।

" प्राणी मात्र के प्रति अगर स्नेह नहीं है।

कोई पत्थर है वह इंसानी देह नहीं है”।।

दूसरों की देखभाल और मदद करने से हमारे अंदर एक ऐसा अनुपम गुण उत्पन्न होता है जो हमें अपने स्वार्थों को भूलने में मदद करता है और हम स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों के हित में कार्य करने को अग्रसर हो पाते हैं। यह भी सत्य है की जो व्यक्ति कभी दुख का अनुभव किया है या कर रहा है वही दूसरे के दुख को समझ पाता है।

उदाहरणार्थ:- एक लंगड़ा लड़का भीड़ से बाहर आता है और दर्द से बिल - बिलबिलाते पिल्ले को अपनी गोद में उठा लेता है। वह लड़का उस पिल्ले के दर्द को दिल से महसूस कर पाया क्योंकि वह भी एक पैर से लंगड़ा था।
सबसे पहले जब मानव का आगमन पृथ्वी पर हुआ, उस समय ना कोई धर्म जाति या भाषा थी। मानव ने अपनी सुविधा अनुसार अपनी-अपनी भाषा, धर्म तथा जाति का निर्माण किया और अपने मुख्य उद्देश्य 'मानवता' से भटक गया। समाज में तरह-तरह की विसंगतियां आ गई और लोग आपस में विभाजित नजर आने लगे।
सही मायने में देखा जाए तो हर धर्म का मूल सार मानवता के गुण को विकसित करने का रहा है।हमारे देश में बहुत सारे ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता खातिर खपा दिया। उनमें कबीर दास जी का नाम बहुत ही प्रमुखता से लिया जाता है। साहित्य और मानवता का संबंध अत्यंत गहरा और अटूट है। साहित्य मानवता की आवाज है, जो न केवल समाज को जागृत करता है बल्कि मानवता के मूलभूत सिद्धांतों का प्रसार भी करता है। साहित्य मानवता के विकास में एक महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है।
मानवतावादी कविताएं समाज के मूल्यों, आदर्शों और मानवता के प्रति लेखक की संवेदनशीलता को दर्शाती है। इनमें मानव जीवन के दुख, संघर्ष, प्रेम, सहानुभूति और न्याय की बातें होती हैं, जो पाठक को संवेदनशीलता और समझदारी के साथ प्रेरित करती हैं।
कुछ प्रमुख लेखकों की मानवतावादी कविताओं द्वारा हम मानवता को समझने का प्रयास करते हैं:-

मैथिली शरण गुप्त जी की कविता “मनुष्य मात्र” मानवता के प्रति उनके गहरे आदर और प्रेम को दर्शाती है। कवि

कहते हैं:-

हिंदू न वह मुसलमान है,

कहने को वह इंसान है।

रखते हैं क्या हम लोग याद,

कुछ भी अपनी मानवता,

बस बन गए हम मूरखों की,

यह तो सब विद्वता।

गुप्त जी ने इस कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि हम सभी धर्म, जाति, और वर्ग की दीवारों से परे एकसमान हैं। मानवता ही हमारी असली पहचान है, और हमें इसे ही सर्वोपरि रखना चाहिए।

मैथिली शरण गुप्त कहते हैं:-

विनय न हो जिसमें, वह वीर,

विनयहीन, सदा बलहीन अधीर,

विनय और वीरता साथ-साथ,

तभी मनुष्य है धर्म परायण।

इस कविता के माध्यम से गुप्त जी मानवता का सार समझाते हुए कहते हैं कि विनय और वीरता का संतुलन ही मनुष्यता का मूल तत्व है। मनुष्य तभी वास्तविक रूप से मनुष्य कहलाने योग्य होता है जब उसमें वीरता और विनय दोनों हो और तभी वह धर्म परायण (धर्म का पालन करने वाला) भी कहलाता है।

दुष्यंत कुमार अपने प्रसिद्ध गजल "साए में धूप" में कहते हैं:-

कहां तो तय था चरागां हर एक घर के लिए,

कहां चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

कवि ने इस ग़ज़ल के माध्यम से समाज में व्याप्त असमानताओं और अन्याय पर प्रहार किया है। उन्होंने मानवता के नाम पर समाज की उन विसंगतियों को उजागर किया है, जहां हर व्यक्ति को समान अधिकार और सम्मान मिलना चाहिए, लेकिन नहीं मिलता।

रामधारी सिंह दिनकर अपनी कविता "कलम आज उनकी जय बोल" में कहते हैं:-

कलम, आज उनकी जय बोल,

जो आग उगलते हैं मुंह से,

जो प्रलय- नाद करते हैं तम के,

विप्लव - विजय बोल।

दिनकर जी ने इस कविता के माध्यम से मानवता के संघर्षशील और वीर पक्ष को प्रस्तुत किया है। वे बताते हैं की सच्ची मानवता तभी प्रकट होती है जब व्यक्ति अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है और सत्य की लड़ाई लड़ता है।

महादेवी वर्मा अपनी कविता "नीर भरी दुख की बदली" में मानवीय संवेदनाओं और मानवीय मूल्यों को दर्शाते हुए लिखती हैं:-

मैं नीर भरी दुःख की बदली।

स्पंदन में चीर निस्पंद बसा,

क्रंदन में आहत विश्व हंसा ,

नयनों में दीपक से जलते,

पलकों में निर्झरणी मचली।

महादेवी वर्मा जी इस कविता के माध्यम से मानवता के उन पहलुओं का चित्रण किया है, जहां दुख और करुणा भी मानवता के गहरे अर्थों को समझाने का माध्यम बनती है।

पद्मा श्री कन्हैयालाल सेठिया जी के काव्य द्वारा मानवीय मूल्यों को समझने का प्रयास करते हैं:-

कन्हैयालाल सेठिया अपनी कविता ' पंथी' के माध्यम से मानव मूल्यों की शिक्षा देते हुए सत्य का वेवाकी से समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि जब तक जन मन नहीं बदलेगा तब तक वतन की ऊंचाइयों का जतन कैसा। सत्य की वेवाकी पर वे कहते हैं:-

बली वासनाओं की दो,

नारियल कुंठा का तोड़ो,

चंदन अहम का घीसो,

बन जाएगा,

तुम्हारा पशु ही प्रभु।

वर्तमान युग में मनुष्य की संवेदना व्यावसायिक वृत्ति के कारण सूखती जा रही है। अब तो प्राणी मात्र में व्याप्त प्रेम भाव भी उससे अछूता नहीं रह पाया है। आज समाज में गिरते मूल्य के दर्शन कदम - कदम पर होते हैं । इसी को इंगित कर कवि अपनी कविता " अर्जुन की प्रतिज्ञा " में लिखते हैं:-

हटा तिमिर का जाल,

ग्वाल बाल गायों का दल,

जहां दूब है पास जल,

वही जा रहा लौटेगा फिर,

होते संध्या काल,

हटा तिमिर का जाल।

कहने का तात्पर्य यह है की अज्ञानता और अन्याय रूपी अंधकार को हटाकर जीवन में शांति, सरलता और नैतिकता की ओर अग्रसर होना चाहिए।

स्वार्थ व यथार्थ सुख की तलाश में आदमी का आत्मीय लगाव न तो उनकी जन्मभूमि से रह गया है और न अपने परिवार और समाज से। संबंधों को तोड़कर बेहतर सुविधाओं के लिए आदमी चिड़िया की तरह फुर्र हो जाता है। अपने साथी को दूर्दिन में पड़ा देखकर कौन उसके साथ जीने मरने को तैयार होता है। दुर्बलता से लाभ उठाना मानवता नहीं है। इसी भाव को अभिव्यंजित करते हुए कवि अपनी कविता " धरती " में कहता है:-

कोई मेरा मीत नहीं है,
दुर्बल मन जब मेरा पाया,
तूने अनुचित लाभ उठाया।

कभी धरती की दुर्दशा को उजागर करते हुए कहता है धरती एक मां की तरह है सबको जीवन देती है लेकिन मानव अपने स्वार्थ खातिर उसके प्राकृतिक संपदाओं का अत्यधिक दोहन कर उसे कमजोर और पीड़ित कर अनुचित लाभ उठाता है। उसी प्रकार मनुष्य अपने मां-बाप के सामर्थ्य और संसाधनों का लाभ उठाकर उसे अकेला छोड़ दे देता है।

सेठिया जी का मानना है कि वसुधैव कुटुंबकम का भारतीय संदेश विश्वभातृत्व भाव को उजागर करने में है। वह कहते हैं:-

आओ आज जगाये घर-घर मानवता का दीप,
देश काल की तोड़ श्रृंखला सबके बने समीप,
रहे न जग में, जिससे कोई पीड़ित दीन अनाथ,
चले जोत की ओर छोड़कर अंत तिमिर का हाथ।

<u>मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं के माध्यम से मानवता को समझने का प्रयास करते हैं:</u>-

" मनुष्यता " कविता में कवि ने मनुष्य के वास्तविक गुण से परिचित कराया है। कवि के अनुसार मनुष्य तभी मनुष्य कहलाने लायक है जब उसमें परहित -चिंतन के गुण हो।

गुप्त जी कहते हैं:-

विचार लो की मृत्य हो ना मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यूं मारो की याद जो करें सभी।
हुई ना यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु - प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य मरणशील है अर्थात मृत्यु निश्चित है। इसलिए कभी भी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। कवि का मानना है कि मनुष्य को ऐसी मौत मारना चाहिए की मृत्यु के पश्चात भी लोग याद करें । यदि तुम्हारी मृत्यु श्रेष्ठ मृत्यु नहीं है तो तुम्हारा जीना एवं मारना व्यर्थ है। जो व्यक्ति केवल अपने लिए जीता है, उसका मरना कोई महत्व नहीं रखता। वास्तव में यह तो पशुओं के स्वभाव जैसा है जो केवल स्वयं का भरण - पोषण करते हैं। हमें दूसरों के हित का भी ध्यान रखना चाहिए। वास्तव में मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए मरता है अर्थात परोपकारी मनुष्य ही मनुष्य कहलाने योग्य है।

मैथिलीशरण गुप्त परोपकारी मनुष्य के बारे में कहते हैं:-

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा संजीव कीर्ति कूंजती;

तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।

अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

कहने का तात्पर्य हैं कि परोपकारी मनुष्य उदार हृदय होता है और सरस्वती देवी भी उसी की कथा का बखान करती हैं। इस प्रकार के उदार व्यक्ति के प्रति यह धरती भी आभार प्रकट करती है। उसी उदार व्यक्ति की मूर्ति संजीव बनी रहती है तथा संपूर्ण संसार उसकी पूजा करता है। ऐसा व्यक्ति ही अखंड आत्मीय भाव असीम विश्व में भरता है। वास्तव में सच्चा मनुष्य वही है जो मनुष्यों के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देता है।

कवि अनेक पौराणिक प्रसंगों का वर्णन करते हुए, मनुष्य को परोपकारी एवं दानशीलता की प्रवृत्ति अपनाने का संदेश देते हुए कहते हैं:-

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,

तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।

उशीनर क्षितिश ने स्वमांस दान भी किया,

सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर - चर्म भी दिया।

अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

कवि कहता है कि भूख से व्याकुल राजा रंतिदेव ने अपने हाथ में पड़ा हुआ भोजन का थाल अन्य व्यक्ति को दान में दे दिया था। रंतिदेव स्वयं भी भूख से व्याकुल हो रहे थे, फिर भी उन्होंने भूख से व्याकुल एक अन्य व्यक्ति को क्षुधा शांत करने के लिए ऐसा किया। इसी प्रकार महर्षि दधीचि ने भी परोपकार की भावना से प्रेरित होकर अपनी हड्डियों को दान कर दिया था। इसी प्रकार गंधार के राजा उशीनर ने भी कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए अपने

शरीर का मांस काट कर दे दिया था। दानवीर कर्ण ने भी परोपकार के लिए अपने शरीर का चर्म प्रसन्नता पूर्वक दान दे दिया था। यह शरीर तो क्षणभंगुर है, नश्वर है। अतः इस शरीर के नाश होने से मनुष्य को डरना नहीं चाहिए। वास्तव में सच्चा मनुष्य वही है जो परोपकार के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दे।

कवि बंधुता, अंतरात्मा, और सभी मनुष्य का ईश्वर एक है, इसका संदेश देते हुए कहते हैं:-

‘ मनुष्य मात्र बंधु है ‘ यही बडा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वंभू, पिता प्रसिद्ध एक है।
फलाअनुसार कर्म के अवश्य वाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाण भूत भेद हैं।
अनर्थ है कि बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

तात्पर्य यह है कि संसार के सभी मनुष्यों को, मनुष्य अपना बंधु समझे। हम सभी का पिता एक ही परमात्मा है हम सभी उसी ईश्वर की संतान है। अपने-अपने कर्मों के अनुसार मनुष्य के बाहरी भेद अवश्य हैं, परंतु हमारी अंतरात्मा एक ही है। वेद इसका साक्षी (प्रमाण) है। यह बड़े अनर्थ की बात है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के कष्ट को दूर नहीं करता। वास्तव में सच्चा मनुष्य वही है जो परोपकार के लिए अपनी जान न्योछावर कर देता है।

<u>मेरी स्वरचित कविताओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों एवं मानवता को समझाने का प्रयास:</u>-

मैंने, अपनी पुस्तक भाव वीथिका में रचित “ मानव एक दूत है प्रभु का” कविता के माध्यम से प्रेम, करुणा, नैतिकता, और अहिंसा का संदेश देने का प्रयास किया है:-

मानव एक दूत है प्रभु का,

करुणा, प्रेम पहचान उसका।

रहे भले सांसारिक बन कर,

सोंच विचार रखे जनहित का।

मानव एक दूत है प्रभु का,

छोड़ दो राह अनैतिकता का।

नहीं रखो तुम राक्षसी प्रवृत्ति,

राह पकड़ चलो मानवता का।

मानव एक दूत है प्रभु का,

नहीं रखो भाव शोषण का।

अहिंसा को परम धर्म मानो,

प्रयास हो सद्भाव बढ़ाने का।

मानव है एक दूत प्रभु का,

सुनाए संदेश रामकृष्ण का।

प्रेम से सबको गले लगाना,

प्रभु सुविचार अपनाने का।

मैं, अपनी कविता " वन्य प्राणी संरक्षण " के माध्यम से वन्य प्राणियों के प्रति मनुष्य का क्या कर्तव्य है, उसे उजागर करने का प्रयास किया है:-

वन्य प्राणी की सुरक्षा है मेरा धर्म,

रहे सुरक्षित उनका जीवन है प्रण।

वनों की कटाई प्रकृति पर आघात,

वन्य जीवों का नष्ट हो रहा आवास।

कहीं लुप्त ना हो जाएं यह वन्य जीव,

वसुधा का आवरण है यह वन्य जीव।

करे न मानव वन्य प्राणी पर अत्याचार,

वनोन्मूलन से ना करें इन पर प्रहार।

अभ्यारण में मस्त घूमते वन्य प्राणी,

हमारे संगी साथी हर प्रजाति के प्राणी।

स्वार्थ बस करते हैं इनका सब शिकार,

वनोन्मूलन से खत्म होते उनके आहार।

वन्य प्राणियों का हो संरक्षण संवर्धन,

प्राकृतिक सौंदर्य अनमोल रत्न धन।

इस धरोहर की रक्षा करो तुम इंसान,

वन्य जीवों की रक्षा इंसानियत का काम।

उपकार करने से जो आत्म - संतुष्टि और तृप्ति मिलती है, उसको मैंने अपनी कविता " उपकार" के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है:-

उपकार का भार रहता हृदय पर,

बन जाता है वह भार जीवन पर।

झुका रहता है सिर उनके समक्ष,

किया उपकार जो बुरे समय पर।

उपकार से देते सहृदयता का परिचय,

मानवता संवेदनशीलता का परिचय।

नहीं कहलाने योग्य होते ओ इंसान,

सरस भावनाओं का न दे जो परिचय।

उपकार कर मिलती आत्म - संतुष्टि,

मदद करने से मिलती आत्म- तृप्ति।

दिया है प्रभु ने हमें अमूल्य जीवन,

दीन- दुखियों की मदद से मिले तृप्ति।

मानवता सबसे बड़ा धर्म है, मैं अपनी इस कविता के माध्यम से दर्शाने का प्रयास कर रही हूं:-

जीवन व्यर्थ है यदि मानवता नहीं सीखे,

चौबीस घंटे भक्ति करके भी क्या सीखे?

अनेक धर्मों में सबसे बड़ा धर्म मानवता,

मानव बन मानव से प्यार करना सीखें।

न हो धर्म का बंधन न सीमा का बंधन,

हर पल मन में सिर्फ मानवीय चिंतन।

करुणा, प्रेम को आधार बना हृदय में,

निष्कपट भाव से बनाओ स्नेह बंधन।

प्रभु राम, कृष्ण, बुद्ध ने दिया संदेश,

मानव कल्याण हो सर्वोपरि उद्देश्य।

उदारता सहिष्णुता से भरा रहे दिल,

न मन में रखे घृणा, नफरत, विद्वेष।

धर्म में सबसे बड़ा धर्म है मानवता,

प्रभु तक पहुंचने का है सुगम रास्ता।

न रखें किसी के प्रति भी हीन दृष्टि,

दरियादिली दिखा कर दिखाएं महानता।

मैं अपनी पुस्तक गजल संग्रह " इजहार ए जिंदगी" में लिखित गजल के माध्यम से मानवीय पहलू को चित्रित

करने का प्रयास किया है:-

निभाना धर्म नेकी का बताती रोज रामायण,

हमें निज धर्म पर चलना सिखाती रोज रामायण।

चलें हम सीख लें इंसान बनकर जिंदगी जीना,

सुकर्म करें सभी को पथ दिखाती रोज रामायण।

विचार शुद्ध रहे मन का तभी हो ईश्वर पूजा,

हृदय में ज्ञान सागर भी बहाती रोज रामायण।

मृतात्मा में भरे आशा उम्मीद की किरण आभा, सनातन धर्म को नियमित पढाती रोज रामायण।

पढ़ो पोथी करो अनुकरण प्रेम भाव रख मन में,

मिटा दो शुद्रताओं को सिखाती रोज रामायण।

मैं अपनी कविता " प्यास बुझती कहां है" के माध्यम से समाज में व्याप्त भुखमरी, यातना, आपसी भेदभाव को अपनी लेखनी के द्वारा दूर करने का प्रयास रहा है:-

लेखनी से अचूक वार करके,

सुषुप्त समाज को जगा दूं।

लालसा जन -जागरूकता की,

प्यास बुझती ही कहां है।

कामना भूखा ना रहे कोई,

यातना भी ना झेले कोई।

समानता का भाव लाने की,

प्यास बुझती ही कहां है।

राग - द्वेष मन से मिटा दूं,

आपसी प्रेम जग में बढा दूं।

भेदभाव प्रवृत्ति खत्म करने की,

प्यास बुझती ही कहां है।

समुद्र सा बना लूं हृदय तल,

समेटती रहूं दरिया का पानी।

जीव जंतुओं को आश्रय देने की,

प्यास बुझती ही कहां है।

मैंने अपनी कविता " समृद्धि है अभिमान का द्वार" के द्वारा अहंम भाव और अभिमान के द्वारा जो हानि होती है,

उसकी और इंगित करने का प्रयास किया है। साथ ही प्रेम और सद्भाव की भावना को समाज में फैलाने खातिर,

संदेश देने का प्रयास रहा है:-

समृद्धि है अभिमान का द्वार,

दुरुपयोग करते हैं अधिकार।

गुरुर पैसे का सर चढ़कर बोले,

असलियत से ना होते दो- चार।

क्यों अभिमान करते हो बंदे,

अहं भाव में हो जाते हो अंधे।

नहीं देर लगता वक्त बदलने में,

समय की मार से पड़ते सब ठंडे।

वक्त बदलने में देर नहीं लगता ,

मिट जाती है बड़े - बड़ों की हस्ती।

अहम् भाव में जो होते हैं गुमराह,

डूबती है उनकी भवंर में कश्ती।

मशहूर होकर मगरूर मत बनना,

अपनी अकड़ दिखाकर मत तनना।

वक्त बदलने में देर नहीं लगता,

रावण बन अपना अंत मत करना।

प्रेम से सत्कार करो जन-जन का,

रखना ध्यान सदा सहृदयता का।

स्नेहिल सद्भाव युक्त दिल रखना।

सम्मान करना अपनी परंपरा का।

मैं अपनी कविता मानव पूंजी के माध्यम से सत्य, नैतिकता, सद्व्यवहार, प्रेम, त्याग, सहिष्णुता आदि मानवीय गुणों को दर्शाने का प्रयास किया है:-

महापुरुषों की जीवनी धरोहर,

मानवीय मूल्य अनमोल मुहर।

नैतिकता धर्म मानव की पूंजी,

रखें अनैतिक गुणों से दूरी।

प्रेम त्याग सहिष्णुता हो जब,

रिश्ते अटूट बन जाते हैं तब।

स्वार्थ लिप्सा और धोखाधड़ी,

हृदय विचलित करती है तब।

व्यवहार आचरण मानव पूंजी,

सत्य नैतिकता की राह चुनी।

संगदिल बन गए कटु दिल भी,

अनुभूति हुई अमरत्व पाने की।

मधुर शीतल वाणी द्वारा ईष्र्या, द्वेष,वैमनस्य किस प्रकार मिटाया जा सकता है, उसका वर्णन मैं अपनी इस कविता के माध्यम से कर रही हूं:-

जिस दिशा में नफरत थी

वहां प्यार की बयार ला दी।

मन की सारी गलतफहमियां,

मधुर शीतल वाणी से मिटा दी।

जिस दिशा में नफरत थी,

वहां मधुरता की बीज डाली।

ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य मिटा कर,

स्नेह अपनत्व का राग भर दी।

एकजुटता, विवेकशीलता एवं सब्र का फल मीठा होता है, जबकि बेसब्री, उतावलापन और आपसी भेदभाव से होने वाले हानि को दर्शाती, मेरी यह कविता:-

मधुमक्खियां सिखाती जीने का सलीका,

सिखाती एकजुट रहने का तरीका।

मधुमक्खियां कहने को कीट- पतंगे,

पर दिखा देती अपनी विवेकशीलता।

किया गर कभी कोई भी उन्हें तंग,

एकजुट हो उस पे टूट पड़ती तुरंत।

दुश्मनों का पसीना देती हैं निकाल,

पेश करती एकजुटता का मिसाल।

देती हैं मेहनत से बनाकर मधुरस,

लाती हर फूल से चूस - चूस कर रस।

मौसम न हो तो खुद चूस उड़ जाती,

समय पर ही भरपूर मधुरस दे पाती।

सीखे सब्र का फल होता है मीठा,

इंसान क्यों नहीं सब्र रख जीता।

बेसब्री, उतावलापन से होती हानि,

मिली चीज भी मूर्खता से खो देता।

प्रेम पूर्वक रहे मिलकर एकजुट ,

ना बनाएं भेदभाव कर अलग गुट।

फुट का होता सदा परिणाम बुरा,

शत्रु डरेंगे आपसी मतभेद कर दूर।

संतों और विद्वानों का मानवतावादी दृष्टिकोण:

कबीर जी का मानवतावादी दृष्टिकोण:

कबीर सबको प्रिय हैं और सब कबीर के अपने हैं, इससे ऊंची बात मानवता के इतिहास में और क्या हो सकती है? कबीर - शब्दावली में कोई पराया नहीं है; कोई उच्च - नीच नहीं है, सभी समादरणीय हैं। उनका सार- वचनोपदेश किसी वर्ग संप्रदाय के लिए नहीं अपितु मानवमात्र के लिए है। सत्य, पाप, अंधविश्वास तथा अज्ञानांधकार को मिटाने का उन्होंने भरपूर प्रयास किया।

आज समाज, देश और विश्व के देशों में बढ़ती हुई भुखमरी अशिक्षा, बेरोजगारी, स्वार्थलोलुपता आदि समस्याओं से सारी मानव जाति चिंतित है। वास्तव में इन्हीं मूलभूत समस्याओं के कारण ही हत्या, लूट, मार-काट आतंकवाद,धार्मिक विद्वेष, युद्धों की विभीषिका आदि समस्याओं ने जन्म लिया है। आज इन समस्याओं ने पूरे विश्व की मानव जाति को अपने गिरफ्त में ले लिया है। इस भयावह परिस्थिति से समाज को सही राह दिखाने के लिए आज कबीर दास जी जैसे युग प्रवर्तक की आवश्यकता है।

कबीर जी ने समाज में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से कहा था कि :-

"वही महादेव वही मोहम्मद ब्रह्मा आदम कहिए।
कोई हिंदू कोई तुर्क कहाव एक जमीं पर रहिए।"

कबीर दास जी एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने अपने युग में समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों और रूढ़िवादिता का विरोध किया। उनका उद्देश्य विषमताग्रस्त समाज में जागृति पैदा कर लोगों को भक्ति का नया मार्ग दिखाना था।

कबीरदास जी ने कहा था कि -

"बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलया कोय।

जो हितय ढूंढो आपनो मुझसा बुरा न कोय।।"

कबीर दास जी का कहना है कि मानव जीवन अनमोल है। अतः मानव जीवन को यूं हीं व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। बल्कि अच्छे कर्मों द्वारा मानवता के उद्देश्य से समर्पित करना चाहिए।

कबीर दास जी कहते हैं कि------

"रात गंवाई सोय कर दिवस गवायों खाय।

हीरा जनम अनमोल था कौडी़ बदले जाये।।"

अर्थात मानव जीवन तो अनमोल होता है किंतु मनुष्य सारी रात तो सोने में गंवा दिया और सारा दिन खाने-पीने में। अज्ञानता में मनुष्य अपने अनमोल जीवन को भोग विलास में गंवाकर कौड़ी के भाव खत्म कर लेता है। मानव आलस्य के कारण आज का काम कल पर टालने का प्रयास करता है जबकि उसे ढेर सारे कामों को इसी जीवन में करना है। कबीर जी ने समय के महत्व को थोड़े शब्दों में ही समझा दिया है।

कबीर दास जी ने कहा है कि–

"काल करे सो आज कर आज करे सो अब।

पल में प्रलय होत है बहुरी करोगे कब।।"

कबीर जी ने असमानता एवं जातिवाद आदि विकारों को दूर करने का भरसक प्रयास किया है वह कहते हैं:-

"जाति हमारी आत्मा, प्राण हमारा नाम ।

अलख हमारा इष्ट, गगन हमारा ग्राम।।"

कबीर जी का लोगों से कहना था कि आप अपने विवेक से अपने अंतर मन में झांके और अपने अंदर के जीवात्मा को पहचान कर सबके साथ बराबर का व्यवहार करें क्योंकि हर प्राणी के अंदर जीवात्मा के स्तर पर कोई भेदभाव नहीं होता। सबका जीवात्मा एक समान है। कबीर जी अहिंसा, सदाचार, सत्य, दया आदि सद्गुणों के उपासक थे। वे सदा सांप्रदायिक सौहार्द के लिए काम करते रहे।

उनका लक्ष्य सर्वधर्म - समभाव और विश्व- बंधुत्व था। वह कहते हैं:-

"हिंदू मैं हूं नाही, मुसलमान भी नहिं।
पंचतत्व को पुतला, गैबी खेले माहिं।"

मानव जीवन के कल्याण हेतु संत कबीर दास जी कहते हैं कि हे मानव! तू सारी दुर्बुद्धि को दूर कर दे, अर्थात असत्य, हिंसा, चोरी एवं अनाचार आदि सब अमानवीय पाप - कर्मों को छोड़कर, सत्य कर्मों से अपना यह मानव जीवन अच्छा बना ले। कौवे जैसी चाल (दुष्प्रवृत्ति) को छोड़कर हंस जैसी चाल (सदवृति) को धारण कर, तभी तेरा यह जीवन सार्थक होगा। वह कहते हैं:-

सकलो दुर्मति दूर करू, अच्छा जन्म बनाव
काग गौन गति छाड़ि के, हंस गौन चलि आव।।

कबीर दास जी कहते हैं इस जगत में जंत्र - मंत्र सब झूठ प्रपंच है, इससे कोई साधना - सिद्धि अथवा जीवन कल्याण नहीं हो सकता। अतः इनमें कोई मत भ्रमों। सद्गुरु का सार - शब्द जाने बिना काग से हंस नहीं हुआ जा सकता अर्थात, मलिन बुद्धि को त्याग कर सद्गुरु के सार - शब्द उपदेश को धारण करने से ही 'हंस' हो सकते हो। वह कहते हैं:-

जंत्र मंत्र सब झूठ है, मति भरमो जग कोय।

सार शब्द जाने बिना, कागा हंस न होय।।

<u>कवि निराला का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

सृष्टि में मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना गया है। बुद्धि का गुण उसे अन्य प्राणियों से अलग करता है। मनुष्य के अंदर छुपी हुई मानवता की पूजा चारों ओर होती है। सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" आधुनिक काल के मानवीय दृष्टिकोण से ओतप्रोत कवि रहे है। मानवतावादी भाव उनके काव्य में सर्वत्र नजर आता है। उनका व्यक्तित्व उदार दिल है और उनका संवेदनशील हृदय दूसरों के प्रति सहानुभूति रखता है।

कवि अपनी कविता "तोड़ती पत्थर" के माध्यम से उस श्रमिक नारी का करूण चित्रण बहुत ही मार्मिकता से किया है और लोगों को समाज में व्याप्त विषमता के प्रति सोंचने को बाध्य किया है:-

"वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे अलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
नहीं छायादार पेड़
वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन - प्रिय कम रत मन
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु - मालिका, अट्टआलिका, प्राकार।"

कवि ने उसी मानवता रूपी दृष्टिकोण को अपनी कविता "भिक्षुक" के माध्यम से एक भिखारी और उसके दो बच्चों

का करुण शब्द चित्र खींचा है जिसकी पंक्तियां कवि के मानववादी दृष्टिकोण को दर्शाती है:-

"वह आता

दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।

पेट- पीठ दोनों मिलकर हैं एक

चल रहा, लाकुटिया टेक, मुट्ठी भर दाने को,

भूख मिटाने को, मुंह कटी पुरानी झोली को फैलाता।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,

बाये से वे मलते हुए पेट को चलते,

और दाहिना दया - दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।

भूख से सूख ओठ जब जाते,

दया - भाग्य - विधाता से क्या पाते ?

घूंट आंसुओं के पीकर रह जाते।"

भिक्षुक के साथ चलने वाले दो बच्चों का यह प्राथमिक मानव अधिकार है कि उन्हें दो वक्त की रोटी मिले लेकिन दाता या भाग्य विधाता से उन्हें यह भी नहीं मिलता। कवि निराला ने ऐसे पीड़ित, दुखी, निरीह, गरीब, श्रमिक, दलित और उपेक्षित जनों का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हुए उनके प्रति अपनी करूण मानवीय दृष्टि का परिचय दिया है।

<u>सुमित्रानंदन पंत का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

पंत जी का मानना था की मानव अलग-अलग वर्गों तथा जातियों में विभक्त होने के कारण आज मानवता खंडित हो गई है और सामाजिक तथा व्यक्तिक दुखों की उत्पत्ति हुई है। आज का मानव तर्क, सिद्धांत, वादों आदि की वार्ता में ही लगा रहता है। धर्म, प्राण, व्यक्ति,रीति, शाखा तथा पंथ के अनुसरण में ही पड़ा रहता है। आधुनिक नव

शिक्षित व्यक्ति द्रव्यमान आदि को ही अधिक महत्व देता है और वैज्ञानिक मृत्यु पूजा के उपक्रम में लगा रहता है। इस विषय में पंत जी का कथन:

"तर्कों वादों सिद्धांतों से बुद्धि, प्राण जन पीड़ित,
नीति रीति शाखा पंथों में धर्म प्राण अति सीमित,
द्रव्य मान मद के दर्जन में रत स्त्री प्रिय नव शिक्षित
महामृत्यु के पूजन में वैज्ञानिक, राज्य नियोजित।"

पंत जी मानते थे कि मानवता के परिसर से संकीर्णता की भावना को दूर करने के लिए सबसे पहले उसे स्वार्थ भावना का सर्वथा परित्याग कर समस्त धरती में एक मानवता की स्थापना करनी होगी।

"सर्वोपरि मानव संस्कृत वन, मानवता के प्रति हो प्रेरित,
द्रव्य मान पद यश कुटुम्ब कुल, वर्ग राष्ट्र में रहे न सीमित।
एक निखिल धरनी का जीवन, एक मनुजता का संघर्णन।

पंत जी विश्व मानवता का विचार इस प्रकार रखते हैं:-
"क्यों ना एक हो मानव - मानव सभी परस्पर
मानवता निर्माण करें जग में लोकोत्तर।"
पंत जी पूर्व और पश्चिम की विचारधाराओं में समन्वय स्थापित करने के पक्षधर थे। पूर्व की आध्यात्मिकता तथा पश्चिम की भौतिकता से संबंध, विचारों में समन्वय करके ही आधुनिक मानव के योग्य जीवन का आधार भूमि प्रस्तुत की जा सकती है। इन दोनों में से किसी भी एक विचारधारा का अतिशय मानव के हित में नहीं रहेगा, ऐसा पंत जी का मानना था।

सम्राट अशोक का मानवतावादी दृष्टिकोण:

सम्राट अशोक ही अपने समकालीन इतिहास के एकमात्र शासक थे जिन्होंने न केवल मानव की बल्कि जीव मात्र की चिंता की। कलिंग युद्ध के बाद चारो ओर लाश ही लाश और खून का समंदर देख सम्राट अशोक को बहुत आत्मग्लानि हुई और उनका मन करुणा और दया से भर उठा। उनका मन सोंचने को मजबूर हो उठा कि दुश्मन ही क्यों ना हो, उसका गला क्यों काटा जाए और अनावश्यक किसी की जान क्यों ली जाए, पर एक छोटी सी भूमि के टुकड़े को प्राप्त करने के लिए। उनके मन में मानववाद जागृत हुआ और उन्होंने बुद्ध धम्म अपना कर उनके मार्ग पर चल पड़े और देश-विदेश में बुद्ध धम्म का प्रचार और प्रसार करने में लग गए।

सम्राट अशोक का मानवतावादी दृष्टिकोण इस बात से उजागर होता है कि वह शिलालेखों पर लिखवा रखे थे कि उनकी प्रजा कभी भी किसी समय भी उनसे मिल सकती है। उन्होंने अपनी प्रजा के लिए जगह-जगह पेड़- पौधे आराम करने के लिए आराम ग्रह, कुआं, चिकित्सालय बनवा रखे थे। यहां तक की पशुओं के लिए भी उस समय चिकित्सालय की व्यवस्था थी।

महात्मा गांधी का मानवतावादी दृष्टिकोण:

गांधी जी एक सच्चे मानववादी थे। मानव वाद का लक्ष्य एक आदर्श जीवन है। इसकी संकल्पना भागवत गीता में है जहां मनुष्य को अपने आप से एक आदर्श व्यक्तित्व बनाने की बात की गई है और सभी व्यक्तियों को इसमें शामिल किया गया है ताकि सामूहिक कल्याण में वृद्धि हो सके। मानववाद का उद्देश्य विश्व का कल्याण और विश्व में नैतिक भावना के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन करना है। गांधी जी ने मानववाद पर आधारित ऐसे समाज की कल्पना की जहां त्याग, सत्य, और अहिंसा हो।

कवि कन्हैयालाल सेठिया अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी से बहुत अधिक प्रभावित थे । वह अपनी कविता ' मेरा युग ' के माध्यम से गांधी जी के मानवतावादी गुणों का बखान करते हैं और उनका वंदन करते हैं। वह कहते हैं:-

जीत रहा है घृणा द्वेष को, दो नयनों का प्यार,

मोम बन गए बापू, तुमको छू कितने पाषाण!

गांधी जी का कहना था कि मानवता की महानता मानव होने में नहीं बल्कि मानवीय होने में है। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव में मानवीय गुण करुणा, सहानुभूति और दयालुता का होना अति आवश्यक है।

महात्मा गांधी द्वारा सिखाए गए मानवता के पांच पाठ:-

<u>दूसरों की सेवा करके स्वयं को खोजें:</u>

कहने का तात्पर्य है कि खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका खुद को दूसरों की सेवा में खो देना है। जब हम एक छोटे से कार्य के द्वारा किसी जरूरतमंद की मदद करते हैं तो हम एक ऐसे समाज का निर्माण करते हैं जो निस्वार्थता और सहानुभूति की अवधारणा पर आगे बढ़ता है।

<u>अगर आप सच जानते हैं तो आगे आएं और बोले:</u>

तात्पर्य यह है कि यदि आप सही हैं और आप इसे जानते हैं, तो अपने मन की बात कहें। प्राय यह देखा गया है कि एन जी वो स्वयंसेवी संस्थाएं लोगों को दुख से बाहर निकालने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं और उनके प्रयास ने बहुतों का भविष्य निखारा है।

<u>अहिंसा का मार्ग चुनें:</u>

गांधी जी हमेशा से अहिंसा के पक्षधर रहे हैं। गांधी जी का मानना था कि हिंसा कई रूपों में होती है और गरीबी हिंसा का सबसे खराब रूप है। गरीबी अधिक विनाशकारी स्थितियां जैसे भूख, बीमारी, अशिक्षा, बेरोजगारी और शोषण को जन्म देती है। गरीबी उन्मूलन द्वारा हम एक बेहतर समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हुए मानवता की

सेवा कर सकते हैं।

जानवरों के प्रति दयालु बने:

"किसी राष्ट्र की महानता और उसकी नैतिक प्रगती का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वहां जानवरों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।"

हम पृथ्वी को जानवरों के साथ साझा करते हैं और इस सह- अस्तित्व के लिए मनुष्य में उनके प्रति करुणा होनी चाहिए । यह सुनिश्चित करना मनुष्य का कर्तव्य होना चाहिए कि उनके कारण जानवरों को दर्द और पीड़ा ना हो।

यदि आप परिवर्तन चाहते हैं, तो स्वयं में परिवर्तन करें:

महात्मा गांधी का कहना था कि अगर हम लोगों के जीवन को बेहतर बनाना चाहते हैं, तो खुद में वह बदलाव लाएं जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

मदर टेरेसा का मानवतावादी दृष्टिकोण:

मदर टेरेसा ने अपना पूरा जीवन बेसहारा गरीबों, लाचारों और मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया। अपने दृढ़ संकल्प के साथ उन्होंने 1950 में कोलकाता में अपना पहला मिशन स्थापित किया था। उस मिशनरीज आफ चैरिटी का उद्देश्य सड़कों पर रहने वाले लोगों, परित्यक्त बच्चों, कुष्ठ रोगियों और एचआईवी एड्स जैसी बीमारियों से पीड़ित लोगों का देखभाल करना, प्यार और सहायता प्रदान करना था। मदर टेरेसा का मानना था कि "प्यार की भूख रोटी की भूख से कहीं ज्यादा बड़ी होती है।" जीवन पर्यन्त वह अपने आप को दलित एवं पीड़ितों की सेवा में खपा दिया।

<u>रविंद्र नाथ टैगोर का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

रविंद्र नाथ टैगोर का मानवतावादी सोंच उनके साहित्य काव्य और दार्शनिक दृष्टिकोण में गहराई से प्रतिबिंबित होता है। उनका मानना था कि मनुष्य का वास्तविक मूल्य उसकी मानवता में है, ना कि उसकी जाति, धर्म, या राष्ट्रीयता। टैगोर का मानवतावाद सार्वभौमिक प्रेम और सहिष्णुता पर आधारित था। उन्होंने किसी भी प्रकार की भेदभावपूर्ण सोंच चाहे वह जाति, धर्म, या राष्ट्रीयता के आधार पर हो, का विरोध किया। उनके विचारों में सभी मनुष्यों में समानता और एकता का भाव होना चाहिए क्योंकि सभी लोग एक ही विश्व- मानवता का हिस्सा हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज को एक ऐसी जगह होना चाहिए जहां हर व्यक्ति स्वतंत्रता, सम्मान, और समानता के साथ जी सके। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं है, बल्कि मनुष्य को उसकी मानवता के प्रति जागरूक करना और उसे अधिक संवेदनशील बनाना है। उनकी कविता "गीतांजलि" और नाटक "डाकघर" उनके मानवतावादी सोंच को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है। टैगोर का मानवतावाद समावेशिता, करुणा, और समर्पण का आदर्श था, जो आज भी प्रासंगिक है।

रविंद्र नाथ टैगोर मानुषेर धर्म में अपनी आस्था व्यक्त करते हैं- " मेरा धर्म मनुष्य का धर्म है जिसमें परम अथवा अपरिमित की व्याख्या मानवता के अर्थों में की जाती है।"

रविंद्र नाथ धर्माडंबरों तथा सामाजिक भेदभाव को मानवता के विकास में बाधक मानकर समाज के प्रगति के लिए इसे त्याज्य बताते हैं - "हे हिंदू देवता क्या आपकी यही इच्छा है कि हम मानव न होकर केवल हिंदू रहें? हमारे देश में यही हो रहा है। सामाजिक नियम - विनियम, रीति - रिवाज तथा पूजन विधि को अत्यधिक महत्व देने के कारण स्वतंत्रता एवं मानवता की उच्च मान्यताएं तिरस्कृत हो रही हैं।" वह सामाजिक, धार्मिक, रूढ़ियों एवं कुरीतियों को मनुष्यता के विकास में प्रमुख बाधा के रूप में देखते थे।

टैगोर का अध्यात्म मानवतावाद से जुड़ा हुआ था ना की किसी संकीर्ण सांप्रदायिक सोंच से। टैगोर पूर्णता मानवतावादी थे। उनकी सोंच में संप्रदायवाद के लिए कोई जगह नहीं थी। मानवतावाद उनके विचारों का केंद्रीय तत्व था। वह स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व और न्याय के मूल्य में आस्था रखते थे। टैगोर मानवतावाद को राष्ट्रवाद से ऊंचे स्थान पर रखते थे। उनका कहना था जब तक मैं जिंदा हूं मानवतावाद के ऊपर देशभक्ति की जीत नहीं होने

दूंगा। टैगोर ने विश्व को मानवता का संदेश दिया। उन्होंने मानव जाति की एकता पर बल दिया। उनका कहना था "मानवता से प्रेम करना ही मानव का प्रथम कर्तव्य है।"

<u>डॉ भीमराव आंबेडकर का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

डॉ आंबेडकर मुख्यतः मानवतावादी विचारक थे। वह मानव की मूलतः समानता के हिमायती थे। उनका उद्देश्य शोषित, पीड़ित एवं दलित समाज का विकास करना, उन्हें मानव अधिकारों के प्रति सजग करना एवं मानवीय अधिकार दिलाना था। डॉ आंबेडकर के मानवतावादी चिंतन के मुख्य स्तंभ थे - सभी मनुष्य समान हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वयं में एक संपूर्ण इकाई है सभी को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक अधिकार समान रूप से उपलब्ध हो। वह किसी वर्ग विशेष के नेता नहीं थे। वे संपूर्ण मानवतावादी थे।

डॉ आंबेडकर के मानवतावाद के प्रमुख तीन आधार स्वतंत्रता, समता एवं बंधुतता है। बहुजन हिताय एवं बहुजन सुखाय उनके मानवतावादी चिंतन के केंद्र बिंदु थे। उनका मानना था कि जब तक मानवों में असमानता औरअन्याय विद्यमान रहेगा स्वतंत्रता की चर्चा ही व्यर्थ है। जब देश के नेता राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग कर रहे थे तो बाबा साहब अस्पृश्यता, जातिवाद, ब्राह्मणवाद, असमानता, अन्याय, अमानवीयता और सामाजिक विषमताओं की कैद से छटपटाते हुए दलित पीड़ितों की मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे थे।डॉ आंबेडकर के मानवतावादीय सोंच में शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था। उनका मानना था कि शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसे प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचानी चाहिए। शिक्षा सस्ती से सस्ती हो ताकि निर्धन व्यक्ति भी शिक्षा प्राप्त कर सके। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है। शिक्षा का द्वार सभी के लिए खुले होने चाहिए। बाबा साहब का कहना था कि शिक्षा शेरनी के दूध के समान है जिसे पीकर हर व्यक्ति दहाड़ने लगता है।

डॉ भीमराव आंबेडकर की मानवतावादी विचारधारा थी:

- मानवीय मुक्ति और स्वतंत्रता सर्वोपरि
- वर्ण - व्यवस्था जाती पाति का विरोध
- सामाजिक न्याय एवं बंधुत्व का भाव

- सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध
- सामंती प्रथा का विरोध, ब्राह्मणवाद का विरोध
- वर्ण विहीन, वर्ग विहीन समाज के पक्षधर
- समस्त मानव समाज में समानता के पक्षधर

<u>ज्योतिबा फुले का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

ज्योतिबा यह जानते थे कि देश व समाज की वास्तविक उन्नति तब तक नहीं हो सकती, जब तक देश का बच्चा-बच्चा जाति-पाति के बंधनों से मुक्त नहीं हो पाता, साथ ही देश की नारियां समाज के प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार नहीं पा लेती। ज्योतिबा फुले का मानना था कि सभी मनुष्य समान हैं। जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। जातिवाद को मिटाना हमारा सामाजिक दायित्व है।

"स्त्रियों को शिक्षित करना समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है।

"सद्भावना और सहानुभूति ही मानव जीवन का आधार है।"

ज्योतिबा फुले समाज में व्याप्त कुप्रथा और अंधश्रद्धा के जाल से लोगों को मुक्त कराना चाहते थे। अपना संपूर्ण जीवन उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा प्रदान करने में स्त्रियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में व्यतीत किया। दलित और निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। वे बाल विवाह विरोधी और विधवा विवाह के समर्थक थे।

<u>गुरु नानक जी का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक जी का मानवतावाद मानव जाति का निस्वार्थ भाव से सेवा करना और जाति पंथ या लिंग की परवाह किए बिना सभी मनुष्यों के लिए सत्य, न्याय और समानता के ऊपर बल देना था। उनकी शिक्षाएं विभिन्न समुदायों के बीच सामंजस्य पूर्ण सह अस्तित्व को बढ़ावा देती है और सामाजिक न्याय और

मानवता की वकालत करती है।

गुरु नानक जी के मानवतावादी दृष्टिकोण के कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

- एकता और समता: उन्होंने सिखाया की सभी मनुष्य ईश्वर की संतान है और सभी को समानता का अधिकार है।

- भाईचारा और सेवा: गुरु नानक जी ने मानवता की सेवा को धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा माना। लंगर की परंपरा इसी सेवा भावना का उदाहरण है जहां जाति, धर्म या सामाजिक स्थिति का कोई भेदभाव नहीं होता।

- न्याय और समानता: उन्होंने सामाजिक और आर्थिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और सामाजिक सुधार के लिए प्रयास किए। वे मानते थे कि सभी को न्याय और समानता का अधिकार मिलना चाहिए।

- आत्मिकता और नैतिकता: गुरु नानक जी ने आत्मिक उन्नति और नैतिक जीवन पर बल दिया। उनके अनुसार सच्चाई, ईमानदारी और नैतिकता पर आधारित जीवन जीना ही सच्चा धर्म है।

- शांति और सहिष्णुता: उन्होंने विभिन्न धर्म और संस्कृतियों के बीच शांति और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। उनके विचार में किसी प्रकार की हिंसा और असहिष्णुता के लिए कोई स्थान नहीं था।

गुरु नानक जी का मानना था कि सबका मालिक एक है। सभी उसी के पुत्र हैं इसलिए सभी से प्रेम करना चाहिए। गुरु नानक देव जी का स्पष्ट रूप से संदेश था कि हमें कभी भी किसी का हक नहीं छीनना चाहिए। मेहनत और सच्चाई से गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए। हमेशा लोभ का त्याग करना चाहिए और मेहनत कर सही तरीकों से धन कमाना चाहिए।

<u>संत रविदास का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

ऐसा माना जाता है कि संत रविदास जी का जन्म मानव कल्याण के लिए ही हुआ था। उनकी दृष्टि में हिंदू, मुस्लिम, उंच- नीच में कोई भेद नहीं है। वे हिंदू -मुस्लिम एकता के लिए जाति -पाति के खाई को पाटने में निरंतर प्रयत्नशील रहते थे जो उनके मानवतावादी दृष्टिकोण को उजागर करता है। उन्होंने मानवता के आगे जन, पद, मान,प्रतिष्ठा आदि को लघु बताया है। उनके अनुसार मानव - मानव सब समान है। उनका मानना था कि मानवता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा जाति -पाति, धर्म और उच्च- नीच है। उन्होंने जाति- पाति, उच्च - नीच और धर्म की

दीवारों को गिराकर मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया। वह कहते हैं:-

"जनम जात मत पूछिए, का जात अरु पात।

रैदास पूत सब प्रभु के, कोए नहिं जात कुजात।।"

अर्थात रविदास कहते हैं, किसी की जाति नहीं पूछनी चाहिए क्योंकि संसार में कोई जाति-पाति नहीं है। सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है। यहां कोई जाति बुरी जाति नहीं है।

"रैदास जनम के कारनै होत न कोए नीच ।

नर कूं नीच कर डारि है, ओछे करम की कीच।।"

अर्थात, मनुष्य को संसार में 100 वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा के लिए निरंतर निष्काम कर्म करते रहना चाहिए। कर्म करना ही मनुष्य धर्म है। संत रविदास आदर्श समाज के लिए मानवतावाद के प्रबल समर्थक थे। वह चाहते थे कि मानव- मानव में संवेदना, आत्मीयत्यता, करुणा की भावना प्रस्फूटीत हो और संपूर्ण विश्व एक आध्यात्मिक बंधुत्व में बंधा हुआ दिखे।

आज का समाज जाति- पाति, भ्रष्टाचार घृणा, द्वेष, आतंकवाद, नक्सलवाद आदि समस्याओं से जूझकर नैतिक मूल्यों को खोता जा रहा है। भारत जैसे प्रजातांत्रिक राष्ट्र में जनता की सेवा करने वाले राजनीतिज्ञ भी अपनी स्वार्थ लिप्सा में नैतिकता खोते जा रहे हैं। इस हालात में मानवतावाद स्थापित करने के लिए संत रविदास का मानवतावादी विचार अवश्य सहायक सिद्ध होगा।

संत रविदास ने वर्ण व्यवस्था का समर्थन नहीं किया बल्कि समता, भाव, कर्म- अकर्म और मानवतावाद पर बल देते हुए समसामयिक समाज को अपनी विनम्र वाणी से संदेश दिया-

"मरम कैसे पाइबो रे, पंडित क्यूं न कहै समझाइ ।

तातै मरौ आवागमन बिलाई।

बहुत विधि धरम निरुपाएऐ, करवा दसै सब कोई।

जिहि घट मैं पूम छूटि है, सो धरम नहीं चिन्हे कोई।

करम- अकर्म विचारिए, सुनि - सुनि वेद पुरान।

संसा सदा हिरदै बसै हरि बिन कौन है रे अभिमान।"

संत रविदास मनुष्य के थोथेपन और रूढ़ि ग्रस्त समाज को सहज शब्दों में अंधविश्वासों से दूर रहने की नसीहत दी है-

"जिन थोथरे पिछौरे कोई, जो परिछौरे कण हो कई।

झूठो रे याहु तन झूठी माया, झूठा हरि बिन जन्म गंवाया।

झूठा रे मंदर भोग विलासा, कहि समझावै जन रैदासा।

थोथा पंडित थोथा वाणी, थोथी हरि बिन सबै कहानी।

थोथा मंदिर भोग विलास, थोथी आन देव की आसा।

साचा सुमिरन नाव विश्वासा, मन वच कर्म कहै रैदासा।"

थोथापन त्याग कर अपने भीतर की आत्मा बचा लो। मैं हिंदू हूं, मैं मुसलमान हूं, मैं इसाई हूं। इस प्रकार के विचार त्याग कर धर्म की आत्मा बचाकर अंतःकरण की आवाज पहचानो जीवन का मोह, स्वप्न सब धोखा है। जब तक अंधकार त्याग कर राम से नाता नहीं जोड़ा तो धन, पद, प्रतिष्ठा सब व्यर्थ है। थोथे पंडित के पांडित्य तो केवल सांसारिक लोग हैं। स्वानुभाव के बिना ज्ञान की बातें सब व्यर्थ है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि सब थोथे हैं। मनुष्य की आशाएं देवता पूरी नहीं करेगा। अपितु परमात्मा के प्रति श्रद्धा भाव से स्मरण ही जीवन की वास्तविकता है। मनुष्य की आशा, वासना ने ही सांसारिक देवताओं की ईजाद की है। इसलिए थोथेपन में उलझना जीवन की सार्थकता नहीं केवल भ्रम है।

रविदास जी ने जाति - पाति के भेदभाव को महारोग कहकर लोगों को समझाते हुए कहा है कि यह रोग मानवता का विनाश करता है और मनुष्य को मनुष्य नहीं समझने देता।

"जात-पात के फेर मंहि, उरझि रहइ सब लोग।

मानुषता कूं खात हइ, रविदास जात का रोग।।"

संत रविदास सच्चे मायने में मानवता की पुजारी थे उनकी वाणी में मानवीय गुण स्पष्ट रूप से झलकता है वह समस्त समाज का उद्धार चाहते थे।

"ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिलै सबको अन्न।

छोटे बड़ों सब सम बसैं, रविदास रहे प्रसन्न।।"

<u>विनोबा भावे का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

विनोबा भावे मूलतः एक सामाजिक विचारक थे जिन्होंने भूदान आंदोलन के जरिए समाज में भूस्वामियों और भूमिहीनों के बीच की गहरी खाई को पाटने का एक अनूठा प्रयास किया। भूदान आंदोलन के माध्यम से लाखों करोड़ों एकड़ जमीन जमींदारों से दान में लेकर गरीबों को बांटी गई।

विनोबा भावे गणितीय समानता के स्थान पर औचित्य पूर्ण अथवा ऐसी समानता चाहते थे जैसे कि हाथ के पांच उंगलियां होती हैं। पांचो बराबर ना होते हुए भी सहयोग से एक साथ मिलकर अनेक कार्य संपादित करती हैं। उंगलियों में अंतर इतना अधिक नहीं की छोटी उंगली एक इंच लंबी हो और सबसे बड़ी एक फीट लंबी। कहने का तात्पर्य यह था कि पूर्ण समानता असाध्य है तो असंतुलित असमानता भी हानिप्रद मानी जाती चाहिए। विनोबा भावे ने आर्थिक समानता के अवधारणा को अधिक महत्व दिया है। उनका मानना था कि आर्थिक समानता के बिना अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। वे स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा बंधुत्व के घोर समर्थक थे।

संत विनोबा भावे ने सर्योदय भूदान पर कार्य किया। सर्वोदय का सीधा अर्थ सब का उदय। सर्योदय में मानवता निहित है। सर्वोदय का लक्ष्य कुछ या बहुत से व्यक्तियों का उत्थान नहीं अधिकतम संख्या में भी उत्थान नहीं

बल्कि सबके उत्थान का है। ऊंचे का भी नीचे का भी। सबल का भी निर्बल का भी। बुद्धिमान का भी बुद्धिहीन का भी। सर्वोदय संपूर्ण समाज के उत्थान को अपना लक्ष्य मानता है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस का मानवतावादी दृष्टिकोण:

स्वामी रामकृष्ण परमहंस न केवल धार्मिकता और भक्ति में आस्था रखते थे, बल्कि मानवता के प्रति गहन प्रेम और सेवा का संदेश भी देते थे। उन्होंने सभी धर्म के प्रति सम्मान और समानता का संदेश दिया। उनका मानना था कि सभी धर्म का एक ही उद्देश्य है - ईश्वर तक पहुंचाना। उनका मानना था कि हर जीव में ईश्वर का वास होता है इसलिए हर जीव का सम्मान और सेवा करना ही सच्ची भक्ति है। वह कहते थे किसी भी व्यक्ति की जाति, धर्म या सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। उन्होंने प्रेम और सेवा को जीवन का मूल सिद्धांत माना। वह कहते थे कि ईश्वर की सच्ची पूजा उसी में है जब हम मानव की सेवा करते हैं और सभी के प्रति सेवा भाव रखते हैं।

महात्मा बुद्ध का मानवतावादी दृष्टिकोण:

पूरी दुनिया को शांति प्रेम त्याग और सद्भावना का पाठ पढ़ाने वाले महात्मा गौतम बुद्ध का जीवन प्रेरणादायक रहा है। उनकी शिक्षाएं आज भी मानवता का पथ प्रदर्शक कर रही हैं। उन्होंने अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए युद्ध भावना वह हिंसा को ठेस पहुंचाई जिससे समाज में शांति व प्रेम का वातावरण बना।
महात्मा बुद्ध ने जाति प्रथा का कठोर विरोध किया और सामाजिक समानता का उपदेश दिया। यही कारण है किधीरे-धीरे सभी जाति व धर्म के लोग बौद्ध धर्म में शामिल हो गए। महात्मा बुद्ध ने उन्ही विषयों पर उपदेश दिया जो मानव मात्र के कल्याण से संबंधित थे। महात्मा बुद्ध का मानवतावादी दृष्टिकोण उनके उपदेशों और शिक्षाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने मनुष्य को केंद्र में रखते हुए ऐसी शिक्षाएं दी जो व्यक्ति की आंतरिक शांति, नैतिकता और दूसरों के प्रति करुणा को बढ़ावा देती है।

- बुद्ध ने चार आर्य सत्य की बात की जिनमें से पहला सत्य है कि जीवन में दुख है। उन्होंने बताया कि दुख का

कारण हमारी इच्छाएं और तृष्णा है। इन इच्छाओं को नियंत्रित करके दुख से मुक्ति पाई जा सकती है

- बुद्ध ने करुणा और अहिंसा को महत्वपूर्ण मानवीय गुण के रूप में बताया। उनका मानना था कि सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और दया का भाव रखना चाहिए।

- बुद्ध का दृष्टिकोण जाति, वर्ग और लिंग के भेदभाव को स्वीकार नहीं करता है। उन्होंने सभी मनुष्यों को समान रूप से देखा और समाज में व्याप्त भेदभाव का विरोध किया।

- उन्होंने कहा कि व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास करना चाहिए और अपने प्रयासों के द्वारा ही मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

- महात्मा बुद्ध ने समाज में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई और समाज में सुधार लाने के लिए अपने शिष्यों को प्रेरित किया।

महात्मा बुद्ध का मानवतावादी दृष्टिकोण उनके उपदेशों में एक सार्वभौमिक संदेश देता है जो किसी भी व्यक्ति के लिए चाहे उसका धर्म जाति या पृष्ठभूमि कुछ भी हो प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

<u>फ्रांसिस्को पेट्राक का मानवतावादी दृष्टिकोण:</u>

फ्रांसिस्को पेट्राक, जिन्हें पेट्राक के नाम से भी जाना जाता है, 14वीं सदी के इतालवी कवि और विद्वान थे। उन्हें मानवतावाद के संस्थापकों में से एक माना जाता है। उन्हें मानवतावाद का जनक भी कहा जाता है। उनका मानवतावादी दृष्टिकोण निम्नलिखित पहलुओं पर आधारित था:-

- पेट्राक ने मानवता की व्यक्तिगत और नैतिक उन्नति पर जोर दिया। उन्होंने यह विश्वास किया कि साहित्य और शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का नैतिक और बौद्धिक विकास हो सकता है।

- पेट्राक ने मानवता के केंद्र में व्यक्ति को रखा। उन्होंने मानव अनुभव, भावनाओं और आत्मज्ञान पर जोर दिया जो मानवतावादी आंदोलन का एक प्रमुख तत्व था।

- उनकी कविताओं और साहित्यिक रचनाओं में मानवीय भावनाओं और अनुभवों की गहराई नजर आती है। उनके

कार्यों में प्रकृति प्रेम और जीवन के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से झलकती है।

मनोबेंद्र नाथ राय (एम एन राय) का मानवतावादी दृष्टिकोण:

एम एन राय एक प्रमुख भारतीय दार्शनिक, राजनीतिज्ञ और क्रांतिकारी थे। वह 20वीं सदी के मानवतावादी विचारको में से एक थे। उन्होंने "रेडिकल ह्यूमनिज्म" या "क्रांतिकारी मानवतावाद" की अवधारणा प्रस्तुत की।

उनका मानवतावादी दृष्टिकोण भारतीय समाज और राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान देता है और आज भी प्रसांगिक बना हुआ है। उनका मानवतावादी दृष्टिकोण निम्नलिखित पहलुओं पर आधारित था:-

- राय के मानवतावादी दृष्टिकोण का मुख्य आधार व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गरिमा था। उन्होंने व्यक्तियों के आत्म- सम्मान, स्वायत्तता और स्वतंत्र विचारों को महत्वपूर्ण माना।
- राय ने तर्कसंगतता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने पर जोर दिया। उनका मानना था कि तर्क और वैज्ञानिक सोच ही मानव समाज को अंधविश्वास और दमन से मुक्त कर सकते हैं।
- उन्होंने धर्म और राजनीति के बीच स्पष्ट अलगाव की वकालत की। उनका मानना था की धर्म का राजनीति में कोई स्थान नहीं होना चाहिए और इसे पूरी तरह से निजी जीवन तक सीमित रखना चाहिए।
- राय ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जो न्याय, समानता और स्वतंत्रता के सिद्धांतों पर आधारित हो। उनका विश्वास था कि समाज का विकास केवल तभी संभव है जब व्यक्ति का संपूर्ण विकास हो।
- राय ने आलोचनात्मक सोंच और स्वतंत्र विचारधारा को प्रोत्साहित किया। वे मानते थे की व्यक्तिगत और सामूहिक विकास के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण आवश्यक है।
- उन्होंने सामाजिक न्याय और समानता की अवधारणाओं को महत्व दिया। उनका मानना था कि समाज के प्रत्येक सदस्य को समान अवसर और अधिकार मिलना चाहिए।
- राय यह मानते हैं कि वर्तमान वैज्ञानिक युग में संकुचित राष्ट्रवाद के लिए कोई स्थान नहीं है क्योंकि इसके अनुसार आचरण करना अंततः मानव जाति के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। राय ने अपने मानवतावादी दर्शन

को "नवमानवतावाद" अथवा "वैज्ञानिक मानवतावाद" की संज्ञा दी है।

दलाई लामा का मानवतावादी दृष्टिकोण:

दलाई लामा का मानवतावादी दृष्टिकोण करुणा, अहिंसा, समानता, धार्मिक सहिष्णुता, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा और वैश्विक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का समावेश है, जो आधुनिक विश्व के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। उनके मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:-

दलाई लामा के मानवतावादी दृष्टिकोण का मुख्य आधार करुणा और दया है। उनका मानना है कि सभी मनुष्यों के बीच करुणा और दया का व्यवहार होना चाहिए, क्योंकि इससे आपसी समझ और सहानुभूति बढ़ती है।

- दलाई लामा सभी मनुष्यों के बीच समानता और समान अधिकारों का समर्थन करते हैं। वह मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान और स्वतंत्रता मिलनी चाहिए चाहे उसकी जाति, धर्म या राष्ट्रीयता कुछ भी हो।

- दलाई लामा का दृष्टिकोण अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित है। वह मानते हैं कि किसी भी प्रकार की हिंसा न केवल अनैतिक है बल्कि समाज के विकास में बाधक होती है। उनका विश्वास है कि शांतिपूर्ण उपायों के माध्यम से ही समस्याओं का समाधान संभव है।

- दलाई लामा शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों के प्रचार- प्रसार पर जोर देते हैं। उनका मानना है कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि यह नैतिक और भावनात्मक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

- दलाई लामा का दृष्टिकोण वैश्विक जिम्मेदारी की भावना पर आधारित है। वे मानते हैं कि हमें वैश्विक नागरिक के रूप में सोंचना चाहिए और पूरे मानव समाज की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए।

मुंशी प्रेमचंद जी का मानवतावादी दृष्टिकोण

प्रेमचंद जी हिंदी और उर्दू साहित्य के प्रमुख लेखकों में से एक थे। उन्होंने अपने लेखन में मानववादी दृष्टिकोण को

प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में मानव जीवन की समस्याओं, संघर्षों, और संवेदनाओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने समाज के कमजोर और शोषित वर्गों की पीड़ा को अपनी कहानियों और उपन्यासों में बड़ी ही सजीवता से उकेरा है। प्रेमचंद जी के मानववादी दृष्टिकोण के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:-

- सामाजिक न्याय:

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में सामाजिक अन्याय और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई है। उन्होंने दलित, किसानों, मजदूरों, और महिलाओं की समस्याओं को प्रमुखता से उकेरा है।

- समता और समानता:

उनके लेखन में जातिवाद,वर्गभेद, और लैंगिक असमानता के खिलाफ संघर्ष दिखाई देता है। वह सभी मनुष्यों को समान अधिकार दिलाने के पक्षधर थे।

- मानवीय संवेदनाएं:

प्रेमचंद के पात्र अत्यंत संवेदनशील और मानवीय रहे हैं। उनकी कहानियों में मानवीय संवेदनाएं और भावनाएं प्रकट होती हैं, जो पाठकों के हृदय को छू लेती है।

- यथार्थवादी चित्रण:

उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन और समाज की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने समय की सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को बड़ी ही सजीवता से प्रस्तुत किया है।

- शिक्षा का महत्व:

प्रेमचंद ने शिक्षा को सामाजिक सुधार का प्रमुख माध्यम माना और इसे अपने लेखन में प्रमुखता से स्थान दिया। प्रेमचंद की प्रमुख रचनाओं में गोदान, कफन, गबन, सेवा सदन आदि शामिल हैं जो उनके मानववादी दृष्टिकोण

को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है। उनके साहित्य में निहित मानवता की भावना उन्हें हिंदी साहित्य के शिखर पर स्थापित करती है।

"गोदान" प्रेमचंद जी का एक अमर कृति है जो भारतीय ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों का सजीव और संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत करती है। यह उपन्यास सामाजिक भेदभाव, आर्थिक असमानता, जमींदारों के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती है।

आम जीवन में घटित मानवता के चंद उदाहरण:

सच्चे इंसानों में दूसरों की भावनाओं को समझने और साझा करने की क्षमता होती है। वे दया, करुणा, और दूसरों की भलाई के लिए एक वास्तविक चिंता दिखाकर सहानुभूति प्रदर्शित करते हैं। वह दुख को कम करने और अपने आसपास के लोगों के कल्याण को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। आम जीवन में घटित होने वाले चंद उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत करता हूं:-

- सत्य को सत्य कहना तो ठीक है परन्तु गलत को गलत कहना भी आना चाहिए। यदि हम गलत को गलत कहने का साहस नहीं जुटा पाते तो हम कहीं से भी मानवतावादी होने का दम्भ नहीं भर सकते।
- किसी व्यक्ति की जबरदस्त पिटाई हो रही हो और भीड़ मूकदर्शक बन देख रही हो, उसे बचाने का प्रयास न कर रही हो। यह दर्शाता है कि उन व्यक्तियों में मानवता नाम की चीज लुप्त हो चुकी है।
- कुत्तों का झुंड किसी बाहरी कुत्ते को बुरी तरह से काट रहा हो और वह कुत्ता जोर-जोर से चिल्ला रहा हो तो अनायास ही कुछ लोग अपने आप को रोक नहीं पाते और उसे बचाने को दौड़ पड़ते हैं। यह दर्शाता है कि उन व्यक्तियों में मानवता रूपी गुण जीवंत है, विद्यमान है।
- जब कोई रिक्शा वाला तपती धूप में चढ़ाई पर रिक्शे को चढ़ाने खातिर धक्का लगाता है तो उसमें बैठे व्यक्ति से रहा नहीं जाता और नीचे उतरकर वह भी उसकी मदद खातिर धक्का लगाने लगता है। यह सब मानवतावादी सोंच के कारण ही संभव है।
- जब कोई घोड़ा गाड़ी का चालक घोड़े को तेज गति से भगाने खातिर लगातार सोंटे लगता है तब उस घोड़े गाड़ी में बैठे कुछ लोग उसके इस कार्य का विरोध करते हैं और ऐसा करने से मना करते हैं। इस प्रकार वे लोग अपनी मानवतावादी सोंच, दया, करुणा का प्रदर्शन करते हैं।
- प्यासे को पानी पिलाना,भूखे को भोजन खिलाना, पक्षियों को पीने खातिर पानी की व्यवस्था करना आदि यह सब मानवतावादी सोंच ही तो है।

- कोरोना काल में कुछ लोगों द्वारा अपनी जान को जोखिम में डालकर शवों का दाह - संस्कार करना मानवतावादी सोंच के ही तो उदाहरण हैं।
- जब कोई व्यक्ति लोगों के सामने पानी में डूबने लगता है या किसी का रोड पर एक्सीडेंट हो जाता है तब हम तुरंत बिना कुछ जाने - समझे उसकी मदद को तत्पर हो उठते हैं। यह सब हमारे मानवीय सोंच को ही दर्शाता है।
- इस तरह के अनेको उदाहरण समाज में मिल जाएंगे जहां लोग मानववादी सोंच से ओत- प्रोत होकर एक दूसरे की मदद के लिए सदा तत्पर रहते हैं।

शोध विषय का भूत, वर्तमान, भविष्य परिपेक्ष्य में व्याख्या

साहित्य सृजन, पठन और मानवता तीनों ही भूत, वर्तमान, और भविष्य के परिप्रेक्ष्य में समाज की दिशा और दशा को प्रभावित करते हैं और आगे भी करते रहेंगे।

भूत (अतीत) परिप्रेक्ष्य: साहित्य सृजन: अतीत में साहित्य सृजन का माध्यम मौखिक परंपराओं, पांडुलिपियों, और शास्त्रीय रचनाओं के रूप में था। इसमें धार्मिक ग्रंथो, महाकाव्यों और लोक कथाओं का योगदान प्रमुख था।

पठन: अतीत में पठन एक सीमित वर्ग तक सीमित था। शिक्षा का प्रसार बहुत धीमा था और पुस्तकें दुर्लभ थी। पठन का उद्देश्य ज्यादातर धार्मिक और नैतिक ज्ञान प्राप्त करना था। जिनके पास पहुंच थी, उनके लिए पठन जीवन के अर्थ को समझने और समाज में अपनी भूमिका को जानने का माध्यम था।

मानवता: अतीत में मानवता की अवधारणा अक्सर धर्म और नैतिकता पर आधारित थी। मानवता का सार धार्मिक ग्रंथो और लोक कथाओं में दिखता था जो नैतिकता, सहानुभूति, और करुणा के आदर्शों को समाज में प्रचारित करते थे।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य:साहित्य सृजन: आज, साहित्य सृजन में कई नए रूप और आयाम जुड़ गए हैं, जैसे कि डिजिटल लेखन, ब्लॉग्स, और सोशल मीडिया। साहित्य में आज के समय की जटिलताएं जैसे कि ग्लोबलाइजेशन, मानसिक स्वास्थ्य, और सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर खुलकर चर्चा हो रही है। साहित्य सृजन अब विविधताओं को स्वीकार कर रहा है और विभिन्न समुदायों की आवाज को मुख्य धारा में ला रहा है।

पठन: वर्तमान समय में पठन का दायरा व्यापक हो गया है। इंटरनेट और ई - बुक्स ने इसे सभी के लिए सुलभ बना दिया है। अब लोग केवल साहित्यिक रचनाओं तक सीमित नहीं हैं, वे विभिन्न विषयों, संस्कृतियों, और विचारधाराओं को पढ़ने में सक्षम हैं। पठन अब सूचना, शिक्षा, और मनोरंजन का एक प्रमुख साधन बन गया है।

मानवता: वर्तमान समय में मानवता की समझ और परिभाषा और भी विस्तृत हो गई है। मानवाअधिकार, सामानता, और स्वतंत्रता के विषयों पर जोर दिया जा रहा है। साहित्य और पठान के माध्यम से लोग आज के जटिल सामाजिक मुद्दों को समझने और उनसे निपटने के तरीके सीख रहे हैं।

भविष्य परिप्रेक्ष्य: **साहित्य सृजन**: भविष्य में, साहित्य सृजन और भी विविध और समावेशी हो सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और तकनीक के नए माध्यम साहित्य सृजन के नए रूपों को जन्म दे सकते हैं। कुछ ऐसी कहानीयां और साहित्यिक विधाएं देखने को मिल सकती हैं जो वैश्विक अनुभवों को एक साथ जोड़ने में सक्षम हों।

पठन: भविष्य में, पठन और भी अधिक इंटरएक्टिव और संवर्धित हो सकता है। वर्चुअल रियल्टी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकें पठन के अनुभव को अधिक गहन और व्यक्तिगत बना सकती हैं। शिक्षा और साहित्य का लोकतंत्रीकरण हो सकता है जिससे ज्ञान का समान वितरण संभव होगा।

मानवता: भविष्य में मानवता की समझ और भी व्यापक हो सकती है। वैश्विक मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, और तकनीकी नैतिकता के प्रति जागरूकता बढ़ सकती है। साहित्य और पठन इस जागरूकता को और गहरा करने में सहायक हो सकती है, जिससे अधिक सहानुभूति पूर्ण और न्याय पूर्ण सामाज की स्थापना हो सकती है और मानवता का विस्तार हो सकता है।

शोध (Research)की आवश्यकता

शोध की आवश्यकता इसलिए होती है, क्योंकि इसके माध्यम से ज्ञान का विस्तार, नई जानकारी प्राप्त करने, समस्याओं को हल करने, और मौजूदा तथ्यों की गहन समझ विकसित करने में मदद मिलता है।

शोध एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो मानव प्रगति के हर क्षेत्र में हमारी मदद करता है। यह हमारी दुनिया को बेहतर ढंग से समझने और सुधारने में सहायक होता है।

सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक समस्याओं को समझने और उन्हें दूर करने में शोध की आवश्यकता महत्वपूर्ण है। इससे समाज की बेहतरीन के लिए नीतियां और कार्यक्रम तैयार करने में मदद मिलता है। नए आविष्कारों, तकनीकों और खोजों के लिए शोध आवश्यक है। यह विज्ञान और तकनीक को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध पुराने सिद्धांतों, धारणाओं, या तथ्यों की जांच करने का अवसर प्रदान करता है।

क्रमबद्ध रूप से सत्य के खोज की प्रक्रिया " शोध " या " अनुसंधान " है। किसी भी विषय का विकास उसमें किए गए शोध के माध्यम से होता है। सफलतापूर्वक किया गया शोध विषय के संचित ज्ञान में वृद्धि करता है तथा उसे और आधुनिक बनता है।

साहित्य सृजन और पठन की कला सदियों पुरानी है। माना जाता है कि हिंदी साहित्य का आविर्भाव सातवीं - आठवीं शताब्दी से हो गई थी। " शिव सिंह सरोज " किसी भारतीय द्वारा लिखी गई हिंदी साहित्य के इतिहास की पहली पुस्तक है।

प्रस्तुत शोध इसी को रेखांकित करने का प्रयास है कि साहित्य सृजन और पठन के माध्यम से मानवीय गुणों का विकास संभव है।

शोध प्रबंध के मुख्य घटक

शोध प्रबंध के मुख्य घटक निम्नलिखित है:-

शोध विषय : अनुसंधान अर्थात शोध का विषय है " साहित्य सृजन, पठन और मानवता।" आधुनिक युग की कल्पना करते हुए यह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आज के युग में लोग अधिक व्यस्त और आत्म केंद्रित हो गए हैं, जिसके कारण लोग साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। साहित्य पठन के अभाव में लोगों में मानवीय गुणों का तेजी से ह्रास हुआ है, जो बहुत ही चिंतनीय है।

साहित्य पठन से हमारे भीतर सहानुभूति और करुणा के भाव विकसित होते हैं, जो मानवता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

आज के जटिल और तेजी से बदलते युग में " साहित्य सृजन, पठन और मानवता " हमें एक बेहतर इंसान बनने, समाज में सुधार लाने, और सहिष्णु समाज के निर्माण में मदद करता है। साहित्य मानवता की सच्ची भावना को जीवित रखने का माध्यम है, यही कारण है कि आज के समय में यह विषय अति आवश्यक है।

शोध विषय का महत्व: आज जब दुनिया तेजी से तकनीकी और व्यवसायिक युग में प्रवेश कर रही है, साहित्य मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम है।

वर्तमान काल में जब मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक विविधता, और मानसिक स्वास्थ्य जैसी चुनौतियां हमारे सामने हैं, साहित्य सृजन, और पठन का महत्व और भी बढ़ जाता है। साहित्य मानवता को गहराई से समझने, उसका सम्मान करने, और उसकी मूल्यों को आगे बढ़ाने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है।

शोध प्रश्न और परिकल्पना: शोध प्रश्न वह सवाल है, जिसका उत्तर शोध में ढूंढा जा रहा है, और परिकल्पना वह संभावित उत्तर है, जिसे जांचने के लिए अनुसंधान किया जाता है।

शोध विषय का प्रश्न:

- साहित्य सृजन और पठन का मानवता पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- क्या साहित्य के पठन से लोगों में सहानुभूति, नैतिकता, और सामाजिक मूल्यों का विकास होता है?
- क्या साहित्य सृजन और पठन के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के बीच समझ और सौहार्द बढ़ता है?
- क्या साहित्य पठन से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है, और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है?

शोध विषय की परिकल्पना:

- साहित्य सृजन और पठन मानवता के नैतिक सांस्कृतिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- साहित्य पढ़ने से व्यक्ति की सहानुभूति और सामाजिक मूल्यों की समझ में वृद्धि होती है।
- साहित्य सृजन और पठन से विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के बीच बेहतर समझ और सहयोग की भावना विकसित होती है।
- साहित्य पठन मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक प्रभावी साधन हो सकता है।

शोध विषय का उद्देश्य:

- यह समझना की साहित्य का सृजन कैसे होता है और किन उद्देश्यों से किया जाता है।
- साहित्य के पठन का मनुष्य की सोंच, दृष्टिकोण, और समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह जानना।
- साहित्य कैसे मानवीय मूल्यों, नैतिकताओं, और समाज के विकास को प्रभावित करता है, यह जानना।

संदर्भ व्याख्या:

साहित्य और मानवता:

साहित्य मानवीय भावनाओं और अनुभवों को चित्रित करता है, जो मानवता की गहरी समझ को प्रकट करने में सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए, बिहारी जी की " बिहारी सतसई " में मानवीय कर्तव्यों और नैतिकता की व्याख्या है। बिहारी के एकमात्र दोहे ने राजा जय सिंह को राज कार्य की ओर प्रेरित कर दिया था, जिससे यह समझा जा सकता है कि साहित्य किस तरह मानवता को दिशा देता है।

पठन और मानवता:

पठन के द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक और नैतिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक होता है। उदाहरण स्वरूप महात्मा गांधी की आत्मकथा " सत्य के प्रयोग" में अहिंसा और सत्य की शक्ति का वर्णन है जो पाठकों को मानवता की गहराई में जाकर सोंचने के लिए प्रेरित करता है।

साहित्य सृजन, पठन और मानवता:

साहित्य सृजन, पठन और मानवता तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। साहित्य मानवीय अनुभवों और भावनाओं का अभिव्यक्ति है, पठन इसके माध्यम से ज्ञान और संवेदनशीलता प्राप्त करने की प्रक्रिया है, और मानवता उन सभी विचारों और मूल्यों का समग्र रूप है जो इनसे प्राप्त होते हैं।

भाषा शैली

साहित्य सृजन, पठन और मानवता पर अपने विचार को आपके समक्ष रखने में सीधी, सरल देवनागरी हिंदी का प्रयोग किया गया है। इसका मूल कारण है कि मेरी क्षेत्रीय भाषा एवं मातृभाषा दोनों ही देवनागरी हिंदी है। हिंदी जन जन की भाषा है। यह एक ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र के लोगों को जोड़ती है।

किसी भी विषय पर लिखने के लिए भाषा शैली यदि सरल, सहज, और ओजपूर्ण है, तो पाठक उसे तन्मयता से पढता है और आसानी से समझ पाता है। सरल भाषा शैली का दूसरा फायदा यह है कि आपकी बात ज्यादा से ज्यादा लोगों तक आसानी से पहुंच पाती है। काव्य पद्यांशों में कहीं-कहीं संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार, रूपक, उपमा, मानवीय कारण, अनुप्रास, यमक और पुनरुक्ति अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है। विषय को रुचिकर बनाने हेतु, कई स्थानों पर सूक्तियों, दोहे, एवं छंदों का प्रयोग भी किया गया है।

तार्किक विश्लेषण

साहित्य सृजन, पठन और मानवता तीनों एक दूसरे से गहरे जुड़े हुए हैं। साहित्य सृजन का तात्पर्य है किसी साहित्यिक रचना या कृति की रचना करना जिसमें कविताएं, कहानियां, उपन्यास, नाटक, और अन्य साहित्य कार्य शामिल होते हैं। यह मानव अनुभव, भावनाओं, विचारों और समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करने का माध्यम है।

साहित्य पठन, दूसरी ओर साहित्य को समझने और उसमें निहित भावनाओं, विचारों, और अनुभवों को आत्मसात करने की प्रक्रिया है। पठन के माध्यम से व्यक्ति न केवल लेखक के दृष्टिकोण को समझता है, बल्कि अपने स्वयं के विचारों को भी परिष्कृत करता है, विस्तार देता है, और नए दृष्टिकोण विकसित करता है।

जब हम साहित्य सृजन और पठन का तार्किक विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि हम मानवता को समझने का प्रयास कर रहे हैं। साहित्य के माध्यम से हम मानवता के विभिन्न पहलुओं, जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, और भावनात्मक मुद्दों का विश्लेषण कर सकते हैं। इस तरह का विश्लेषण हमें यह समझने में मदद करता है कि मनुष्य किस प्रकार सोचते हैं, कार्य करते हैं, और एक दूसरे के साथ कैसे जुड़ते हैं। साहित्य सृजन, पठन और मानवता का तार्किक विश्लेषण एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं और वह मिलकर समाज को गहराई से समझने और उसे सुधारने के लिए हमें प्रेरित करते हैं।

स्वाभिमत (खुद का नजरिया)

जब हम किसी विषय पर शोध करते हैं तो हम अपने आप में पूर्ण स्वतंत्र होते हैं, अपनी बात को पूरी स्वतंत्रता के साथ कहने , बताने और समझाने के लिए। शोध हेतु हम संबंधित विषय का गहन अध्ययन करते हैं और अपना नजरिया विकसित करते हैं। हमारे नजरिए में और दूसरों के नजरिए में कितनी समानता है यह तो तर्क - वितर्क के बाद ही पता चल पाता है।

साहित्य सृजन, पठन और मानवता समाज से जुड़ा मूल विषय है जिस पर सारा समाज निर्भर होता है। इसके बिना हमारा समाज और हम सब अपंग और अपाहिज भांति हैं। सामाजिक एवं मानसिक विकास के लिए साहित्य सृजन, पठन और मानवता, मेरी दृष्टि में, अनिवार्य है। जिस प्रकार पौष्टिक भोजन से शरीर का विकास होता है उसी प्रकार साहित्य सृजन, पठन और मानवता से सामाजिक एवं मानसिक विकास होता है। साहित्य सृजन, पठन और मानवता के अभाव में स्वयं की और समाज की मानसिक एवं सामाजिक हानि करने जैसा होगा।

इसके अतिरिक्त, साहित्य सृजन, पठन के माध्यम से मानवता को विभिन्न तरीकों से प्रभावित किया जा सकता है और इसके कई सकारात्मक परिणाम हो सकते हैं जिसमें कुछ निम्नलिखित हैं:-

1. मानवता की संवेदनशीलता को बढ़ाना:

   साहित्य सृजन, पठन के माध्यम से मानवता की संवेदनशीलता को बढ़ाया जा सकता है । यह हमें दूसरों की भावनाओं और अनुभवों को समझने में मदद करता है और हमें और सहानुभूति पूर्ण बनाता है।

2. मानवता की रचनात्मकता को बढ़ाना:

   साहित्य सृजन, पठन के माध्यम से मानवता की रचनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है। यह हमें नए विचारों और दृष्टिकोणों को खोजने में मदद करता है और हमें अधिक रचनात्मक बनता है।

3. मानवता की एकता को बढ़ाना:

   साहित्य सृजन, पठन के माध्यम से मानवता की एकता को बढ़ाया जा सकता है। यह हमें विभिन्न

संस्कृतियों और समाजों के बारे में जानने में मदद करता है और हमें एक दूसरे से जुड़ने में सहायक होता है।

शोध सार:

साहित्य सृजन मानव अनुभवों, भावनाओं और, विचारों की अभिव्यक्ति का एक सृजनात्मक माध्यम है। इसका मुख्य सार है, व्यक्तित्व और समाज के विभिन्न आयामों को कला के रूप में प्रस्तुत करना जिससे लोग खुद को और अपने आसपास की दुनिया को बेहतर ढंग से समझ सकें।

साहित्य पठन ज्ञान संवेदनशीलता और समझ को विकसित करने की प्रक्रिया है। पठन का मुख्य सार है, एक पाठक को लेखक के दृष्टिकोण से जोड़ना और उसके भीतर अंतर्दृष्टि, सहानुभूति, और मानवता रूपी गुण का विकास करना।

मानवता जीवन के मूल्यों, नैतिकता और सहानुभूति पर आधारित है। मानवता का मुख्य सार है सभी मनुष्यों के प्रति करुणा, दया, और सम्मान का भाव रखना और साहित्य के माध्यम से इसे और भी गहरा और व्यापक बनाना। साहित्य सृजन और पठन के माध्यम से हम मानवता के गहरे अर्थ को समझ सकते हैं और इसे अपने जीवन में उतार सकते हैं। साहित्य सृजन, पठन और मानवता के बीच एक अटूट संबंध है जो हमें अपने आप को और दुनिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है। साहित्य हमें मानवता के मूल्य जैसे प्रेम, करुणा, न्याय, और सत्य की खोज करने में मदद करता है।

इस शोध के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं:-

- साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है वर्तमान को चित्रित करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है।
- साहित्य हमारे इतिहास और विरासत को संजोकर रखता है और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाता है।
- मानवता साहित्य के बिना अधूरी है क्योंकि साहित्य हमें वह दृष्टि देता है जिससे हम मानव जीवन को गहराई से समझ सकते हैं।
- साहित्य मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने में मदद करता है।
- साहित्य और मानवता का संबंध अत्यंत गहरा और अटूट है।

- मानवता की महानता मानव होने में नहीं बल्कि मानवीय होने में है।
- मानवता हमें सिखाता है कि समस्त मनुष्य एक समान है।
- मानवता से प्रेम करना ही मानव का प्रथम कर्तव्य है।
- मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

********** अंत **********

संदर्भ (Reference):

1. “हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी।” पुस्तक: भारत - भारती, लेखक: मैथिली शरण गुप्त।
2. स्रोत पुस्तक: शिवसिंह सरोज, लेखक: शिव सिंह सेंगर, प्रकाशन वर्ष - 1883
3. "जो कह दिया सो बह गया जो लिख दिया सो रह गया।" स्रोत: साहित्य कुंज्ज (m.sahityakunj.net)
4. "अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है।" स्रोत: आचार्य महाश्रमण जी का प्रवचन (फेसबुक)
5. "नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इहिं काल।" स्रोत पुस्तक: बिहारी सतसई, रचनाकार : डॉ हरिचरण शर्मा, प्रशासन: श्याम प्रकाशन, संस्करण - 2007
6. स्रोत पुस्तक: कबीर दोहावली, लेखक: ज्वाला प्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार, संस्करण - 2014
7. कबीर दोहावली, लेखक: सं० नीलोत्पल, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली
8. तोड़ती पत्थर (कविता) - स्रोत पुस्तक: निराला संचयिता, लेखक: सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, संस्करण - 2010
9. भिक्षुक (कविता): स्रोत पुस्तक: परिमल, लेखक: सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।
10. स्रोत: सुमित्रानंदन पंत के मानव वाद के सिद्धांत का एक विवेचन, लेखक: डॉक्टर आरपी वर्मा, राजकीय महाविद्यालय गोसाई खेड़ा, जनपद उन्नाव, उत्तर प्रदेश
11. स्रोत: अशोक का जीवन परिचय & शूरवीर सम्राट अशोक की जीवनी- m.bharatdiscovery.org, Leverage Edu leverageedu.com
12. स्रोत: गांधी के चिंतन में मानववादी तत्व - पुनीत शुक्ल & इफ्तिखार अहमद अंसारी (Ph.D)Published on 01 Dec2021 Open Academic Journals Index, oaji.net
13. स्रोत पुस्तक: डॉक्टर अंबेडकर आत्मकथा एवं जन संवाद, संपादक: डॉ नरेंद्र यादव, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (Internet Archive)
14. स्रोत: ज्योतिबा फुले जीवनी, प्रकाशन: jivani.org
15. स्रोत: बौद्ध धर्म का सामाजिक आयाम, उद्भव, प्रभाव एवं पतन द्वारा: रोशन राज (शोधार्थी छात्र) डॉक्टर चंद्र प्रकाश सिंह, सहरसा (बिहार) प्रकाशन : 22 दिसंबर 2021 International Journal of History
16. स्रोत: गुरु नानक जी के उत्तम विचार, द्वारा : शिवानी सिंह 7 नवंबर 2022 (www.jagran.com)
17. स्रोत: विनोबा के सर्वोदयी परिकल्पना में व्यक्ति की स्थिति द्वारा : डेगलाल महतो, राजनीतिक शास्त्र

विभाग, गिरिडीह, झारखंड, दिसंबर 2021 (shodhsamagam.com)
18. स्रोत: करुणा और व्यक्ति, dalailama.com
19. पेट्राक की जीवनी, Britannica.com
20. स्रोत: मानवेंद्र नाथ राय,भारत कोश, m.bharatdiscovery.org
21. स्रोत: महान लेखक: मुंशी प्रेमचंद (www.drishtiias.com) 17 Sep 2020
22. स्रोत: रविंद्र नाथ टैगोर के निबंधों में व्याप्त मानवतावादी स्वर, लेखक: डॉक्टर अंबरीश त्रिपाठी (Google)
23. " हिंदू ना वह मुसलमान है, कहने को वह इंसान है।" पुस्तक: भारत - भारती,
लेखक: मैथिली शरण गुप्त
24. " कहां तो तय था चारागाह हर एक घर के लिए।" पुस्तक : साये में धूप (गजल संग्रह) लेखक : दुष्यंत कुमार
25." कलम आज उनकी जय बोल " पुस्तक: रश्मिरथी, लेखक: रामधारी सिंह दिनकर
26." मैं नीर भरी दुख की बदली " पुस्तक: नीरजा, लेखक: महादेवी वर्मा
27. " विनय न हो जिसमें वह वीर " पुस्तक: साकेत, लेखक: मैथिली शरण गुप्त
28 " बली वासनाओं की दो नारियल कुंठा का तोड़ो।" पुस्तक: मिट्टी रो मोल,
लेखक: कन्हैयालाल सेठिया
29 " इसके दुख में मेरा दुख है, इसके सुख में मेरा सुख है।" पुस्तक: अग्नि वीणा,
लेखक: कन्हैयालाल सेठिया
30 " हटा तिमिर का जाल, ग्वाल बाल ले गायों का दल।" पुस्तक:अग्नि वीणा,
लेखक: कन्हैयालाल सेठिया
31 " कोई मेरा मीत नहीं है, दुर्बल मन जब मेरा पाया।" पुस्तक: मिट्टी रो मोल , लेखक कन्हैयालाल सेठिया

32. " सत्य के प्रयोग" , लेखक: मोहनदास करमचंद गांधी, हिंदी अनुवाद: हरि भाऊ उपाध्याय, प्रकाशन वर्ष: 1940, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद

33. स्रोत पुस्तक: भाव वीथिका, लेखक: सुनीता रानी राठौर, प्रकाशन वर्ष: अप्रैल 2023, प्रकाशक: Shopizen